RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 4 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका

मार्च 2024

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

रंगों का पर्व होली की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम विकास अधिकारी एवं समस्त वार्डपंच व ग्रामवासी

- पानी की बूंद-बूंद को बचाएं।
- अधिकाधिक पौधारोपण कर उनका रख-रखाव व सुरक्षा करें।
- अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
- जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें।
- बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोकें।

भंवरलाल सरगरा
सरपंच

लक्ष्मण दास वैष्णव
उपसरपंच

ग्राम पंचायत तासोल, पंचायत समिति, राजसमंद

रंगों का पर्व होली की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम विकास अधिकारी एवं समस्त वार्डपंच व ग्रामवासी

✔ पानी की बूंद-बूंद को बचाएं।
✔ अधिकाधिक पौधारोपण कर उनका रख-रखाव व सुरक्षा करें।
✔ अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
✔ जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें। ✔ बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोकें।

कंकु देवी गुर्जर
सरपंच

मोतीलाल भील
उपसरपंच

ग्राम पंचायत भावा, पंचायत समिति, राजसमंद

रंगों का पर्व होली की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

गोकुलराम भील-उपसरपंच
ग्राम विकास अधिकारी एवं समस्त वार्डपंच व ग्रामवासी

✔ पानी की बूंद-बूंद को बचाएं। ✔ अधिकाधिक पौधारोपण कर उनका रख-रखाव व सुरक्षा करें। ✔ अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
✔ जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें। ✔ बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोकें।
✔ ग्राम पंचायत क्षेत्र को स्वच्छ बनाएं रखने हेतु प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण करावें।

गंगासिंह चुंडावत
सरपंच

ग्राम पंचायत सेलागुड़ा, पंचायत समिति, आमेट

रंगों का पर्व होली की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

उपसरपंच, ग्राम विकास अधिकारी एवं समस्त वार्डपंच व ग्रामवासी कोटड़ी

✔ पानी की बूंद-बूंद को बचाएं। ✔ अधिकाधिक पौधारोपण कर उनका रख-रखाव व सुरक्षा करें। ✔ अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
✔ जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें। ✔ बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोकें।
✔ ग्राम पंचायत क्षेत्र को स्वच्छ बनाएं रखने हेतु प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण करावें।

अभिषेक चौधरी
सरपंच

ग्राम पंचायत कोटड़ी, पंचायत समिति, रेलमगरा

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशंचद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

सम्पादकीय

होली की सार्थकता

होली का पर्व रंगों का त्यौहार है। हंसी- खुशी, राग-द्वेष भूल एक होने एवं बुराई पर अच्छाई की जीत की प्रेरणा है।

धार्मिक लिहाज से यह पर्व भक्त प्रह्लाद व हिरण्यकश्यप की कहानी से जुड़ा हुआ है। प्रह्लाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकश्यप ने उसे जलाने की कोशिश की, लेकिन भक्त प्रह्लाद बच गए और होलिका जल गई। इसी तरह होली कृष्ण की लीलाओं से भी जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि कृष्ण अपनी प्रिय राधा और गोपियों के साथ रंगों से खेलते थे।

अब अगर सामाजिक समरसता की बात करें, तो होली एक ऐसा त्यौहार है, जो सभी जाति, धर्म और पंथ के लोगों को एक साथ लाता है। रंगों का पर्व हमें अपनी बुराइयों को त्यागकर अच्छाई का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देता है।
सांस्कृतिक महत्व की बात करें तो बसंत ऋतु का आगमन का प्रतीक है होली का पर्व। यह पर्व हर शख्स के जीवन में खुशी व उत्साह का संचार करता है। इसलिए लोकगीत व नृत्य का खास महत्व है। साथ ही पारम्परिक गेर नृत्य का आयोजन भी खुशी उ उत्साह का एक नमूना है।

होली एक ऐसा त्यौहार है, जो धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह त्यौहार हमें बुराई पर अच्छाई की जीत, सामाजिक समरसता और जीवन में खुशियों का संदेश देता है। इसलिए आमजन को धर्म, जाति से ऊपर उठकर सादगी, सद्भावना से यह पर्व मनाने की जरूरत है, तभी इसके पीछे का जो ध्येय है, वह सार्थक सिद्ध हो सकेगा। वरना तो यह होली का पर्व मात्र एक इवेंट बनकर रह जाएगा।

लक्ष्मणसिंह राठौड़
उप सम्पादक
जयवर्द्धन न्यूज

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696
तेजस्वी कम्प्यूटर्स, कुंवारिया
मो. 9950084705, 9672980901

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

अपने बिजनेस को दें बुलन्दियां
सस्ती दरों पर जयवर्द्धन पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
₹1000/-
सम्पर्क
जयवर्द्धन मल्टीमीडिया

होली के रंग भारतीय संस्कृति के संग

भारत बहु आयामी लोक संस्कृति और त्योहारों और उत्सवों का देश है, जो परम्पारगत तरीके से संदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों के साथ अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने में कामयाब रहा है । सतयुग, त्रैता युग, द्वापर युग और कलयुग इन चार युगों में धर्म अर्थ काम मोक्ष के सिद्धान्त को मानव जीवन को जीने का आधार स्तम्भ बनाकर सनातन धर्म की व्याख्या की है। साथ ही इस देश में ऋतुओं का भी बड़ा महत्व है। ऋतुओं के आधार पर हमारे देश के तीज और त्यौहार मनाए जाते रहे हैं। कृषि प्रधान देश होने की वजह सें कृषि पौराणिक सभ्यता से लेकर आधुनिक सभ्यता तक भारत की मिट्टी की रगो में बसी हुई है।

आज भी 65 प्रतिशत आबादी गांव और ढाणियों में निवास करती है, जिनका मूल व्यवसाय खेती और पशुपालन ही है। खेती भी मौसम और ऋतु अनुरूप ही बोई और काटी जाती है और जब फसल पककर कटने का समय आता है, तब कोई ना कोई त्यौहार बड़े हर्ष और उल्सास के साथ ग्रामवासी ऋतु अनुसार मनाते हैं। ग्रीष्म, शरद, हेमंत, शिशिर, बसंत हर ऋतु में एक अलग ही आनंद और उत्साह लोगों में देखने को मिलता है और इन्हीं ऋतुओं में बंसत ऋतु का स्वागत करते हुए होली का त्यौहार आता है। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार अलग अलग कथाओं में होली के पर्व का महत्व बताया गया है।

हिरण्यकश्यप के कहने पर होलिका प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी गोद में बैठाकर आग में प्रवेश कर गई, किंतु भगवान विष्णु की कृपा से तब भी भक्त प्रह्लाद बच गया और होलिका जल गई, तभी से बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में होलिका दहन होने लगा और ये त्यौहार मनाया जाने लगा। कामदेव की पत्नी रति को अपने पति के पुनर्जीवित का वरदान और शिवजी का पार्वती से विवाह का प्रस्ताव स्वीकार करने की खुशी में देवताओं ने इस दिन को उत्सव की तरह मनाया। यह दिन फाल्गुन पूर्णिमा का ही दिन था। इस प्रसंग के आधार पर काम की भावना को प्रतीकात्मक रूप से जलाकर सच्चे प्रेम की विजय का उत्सव मनाया जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव जब पहली बार मां पार्वती को काशी लेकर आए थे। भोलेनाथ के भक्तों ने अबीर, गुलाल और रंग बिरंगे फूलों से माता पार्वती का स्वागत किया था। इसलिए हर साल काशी में रंगभरी एकादशी के दिन होली मनाने की परंपरा चली आ रही है। ब्रज की होली राधा- कृष्ण की रास लीला से जोड़कर आज भी ब्रजवासियों में सखा भक्ति से मनाने की परम्परा अनूठी है। बरसाना की लठ्ठ मार होली को देखने देश विदेश के लोग मथुरा, वृंदावन जाते हैं। वहां यह पर्व बसंत पंचमी से शुरू होता है और महीनेभर तक मनाया जाता है। ब्रज के रसिया बहुत लोकप्रिय होते हैं। आज भी वहां पुरानी संस्कृति के अनुरूप रसिया प्रेम से देवर भाभी की नोंक झोंक में गाली गाने का चलन है। इसी छेड़छाड़, हंसी मजाक के साथ होली उत्सव को मनाया जाता है। वहां बांके बिहारी जी के मंदिर में ठाकुरजी के विग्रह पर टीका लगाकर होली के इस पर्व का शुभारंभ किया जाता है और रंग पंचमी के दिन समापन किया जाता है।

राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में भी चंग की थाप पें लोक गीत गाते हुए महीनेभर होली खेलने का चलन है। यहां इलाजी की पूजा करने का भी रिवाज़ है। आज के आधुनिक युग में होली का पर्व व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण है। होली के समय में कई विज्ञापन कंपनियों द्वारा बनाए गए हैं, जिसमें होली का महत्व बताया गया है। कई कंपनियां अपने प्रोडक्ट को होली के त्यौहार पर होली को भाईचारे, प्रेम और एकता के रूप में दर्शाते कौमी एकता की मिसाल पेश करते हुए टीवी पर अपने विज्ञापन के माध्यम से सामग्री बाजार में उतारती है।

होली के फिल्मी गीत भी शानदार

होली के त्यौहार को फिल्मी उद्योग में भी बहुत अच्छी तरह से भुनाया है। आज भी चलचित्रों में होली का कोई न कोई गीत आ ही जाता है। कई मशहूर गीत है, जो होली के पर्व पर टेलीविजन और रेडियो पर प्रसारित होते हैं- मारो भर भर कर पिचकारी..., होली आई रे कन्हाई रंग भर दे..., आई होली आई..., होली के दिन दुश्मन भी गले मिल जाते हैं..., भागी रे भागी बृजबाला कान्हा ने पकड़ा रंग डाला... और सबसे मशहूर गीत जो लोकगीत पर आधारित था, जिसे हरिवंश राय बच्चन ने लिखा था। फिल्म सिलसिला में अमिताभ बच्चन की आवाज़ में रिकॉर्ड कर रेखा और अमिताभ बच्चन पर फिल्माया गया। रंग बरसे भीगे चुनर वाली... आज भी बहुत ही लोकप्रिय गीत है।

होली के दोहा, शायरियां भी गजब

गीतकारों, कवियों, शायरों ने होली के पर्व को अपनी लेखनी के माध्यम से बहुत खूबसूरती से भाव और शब्दों के माध्यम से पिरोया है। अमीर खुसरो ने सुफियाना अंदाज में होली के दोहे लिखे जो आज भी गाए जाते है। यह ये दोहा काफी चर्चित है-

रैनी चढ़ी रसूल की सो रंग मौला के हाथ।
जिसके कपरे रंग दिए सो धन धन वाके भाग।।
खुसरो बाजी प्रेम की मैं खेलूं पी के संग।
जीत गयी तो पिया मोरे हारी पी के संग।।

होली का त्योहार मुगल काल में भी बहुत लोकप्रिय त्यौहार था, आज भी कौमी एकता और भाईचारे की मिसाल देते हुए जाति धर्म के सभी बंधन तोड़ते हुए अबीर गुलाल और रंग और पानी से बड़े प्रेम के साथ राग द्वेष को भुलाते हुए इस त्यौहार को मनाया जाता है।

होली के दिन किए गए मजाक को भी बुरा नहीं माना जाता है। देश की ख्यातनाम पत्र पत्रिकाएं भी होली पर बड़े-बड़े राजनेता, फिल्म अभिनेता और अलग-अलग क्षेत्र में प्रसिद्ध लोकप्रिय लोगों पर भी कार्टून बनाकर उन पर व्यंग कटाक्ष करते हुए बुरा ना मानो होली है..., शीर्षक से स्लोगन लिखते हैं, जिसे बड़े चटकारो से पढ़ा जाता है।

होली प्रेम, उल्लास, अपनेपन की भावनाओं को बढ़ाने वाला वो त्यौहार है, जिसे वर्तमान समय में भारत ही नहीं, पूरे विश्व में भी मनाया जाने लगा है। पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से होली के पर्व के दर्शन को समझना भारतीय संस्कृति को गहराई से समझने का और बहुआयामी रूपों को सांझा रूप में समझाने का एक अलौकिक प्रयास है। हर युग में होली के पर्व को बहुत ही खूबसूरती से प्रेम के कैनवास पर विविध रंगों से उकेर कर खूबसूरत तस्वीर बनाई गई है और यही तस्वीर भारतवर्ष को पूरे विश्व में एक अलग ही नजरिए से प्रस्तुत करती है। वैसे भी भारतवर्ष तीज, त्यौहारों का देश कहा जाता है। वसुंधैव कुटुंबकम के सिद्धांत को हमारी सनातन संस्कृति ने अपनाकर प्रकृति के रंगों को अपने अंदर समेट लिया है। पलाश के फूलों की खूबसूरती के साथ उसके द्वारा बनाए गए रंग से होली खेलने का चलन ही प्रकृति से प्रेम और प्रकृति के प्रत्येक जीव के साथ प्रेम का व्यवहार करने का नाम ही होली है और यही आनंद के साथ परमानंद के साक्षात दर्शन करने का आध्यात्मिक रास्ता भी है। प्रभु प्रेम के भूखे होते हैं और प्रेम का रंग ही एक ऐसा रंग है, जो चढ़कर कभी नहीं उतरता है। आओ हम भी बुराइयों का अंत करते हुए प्रेम के रंग में रंग जाए और राग द्वेष, अपना- पराया, नफ़रत हिंसा, लालच से जो मन मेला हो गया है, उसे होली के अवसर पर धोकर अपने परायों को बड़े प्रेम से होली का रंग लगाए सारे गिले- शिकवे शिकायतें भूलाकर अपने करीबी रिश्तेदारों, सगे संबंधियों, भाई बुंधुओं को गले लगाए। क्योंकि वर्तमान समय में सबसे ज्यादा कटुता नजदीकी रिश्तों में देखने को मिलती है। परायों को अपना बनाने के साथ साथ अपनों को अपना बनाने का प्रयास करना ही होली के पर्व की रंग बिरंगी उड़ती हुई अबीर गुलाल में प्रेम का रंग भर सकता है और यही इस आधुनिक युग की आपाधापी में होली जैसे त्योहार की सार्थकता सिद्ध कर सकता है।

अर्थ के इस युग में त्यौहारों के अर्थ को भुलाने वाली नई पीढ़ी अगर त्यौहारों को मानव सभ्यता का मूल मानेगी, तभी मानवता का सिद्धान्त समझ सकेगी। नए युग में पुराने युगों के तीज़ त्यौहारों को मनाना और बचाना ही हमारी संस्कृति की रक्षा करना है। हम देश, समाज और परिवार में त्यौहारों को उसी उल्लास के साथ मनाए, जैसे हमारी पुरानी पीढ़िया मनाती आ रही है, तो युगो युगों तक त्यौहारों की इस संस्कृति को हम जिंदा रख सकते हैं।

सूर्यप्रकाश दीक्षित
कवि व साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली
मो. 94146 21730

प्रकृति से संवाद का संदेश वाहक है पुष्टिमार्गीय होली महोत्सव

नाथद्वारा और कांकरोली सहित देश के सभी पुष्टिमार्गीय मंदिरों में वसंत पंचमी से लेकर होली व धुलंडी तक रंगोत्सव की एक सतत् श्रृंखला चलती है। ऐसा लगता है मानो इन वृहत् सांस्कृतिक केन्द्रों में बाह्य प्रकृति में सर्वत्र उड़ रहे पीत, गुलाबी, हरित रंगों से संवाद कर हम अपनी अंतःप्रकृति में भी उसी रंगोल्लास की अनुभूति कर आनंदित होते हैं। पुष्टि मार्ग के आराध्य श्रीकृष्ण व उनके आसपास के सम्पूर्ण परिकर गोवर्धन, वन, यमुना, करील कुंज, निकुंज आदि को देख ऐसा लगता है, मानों इन मंदिरों में प्रकृति के इन उपादान या उपकरणों से यहां की प्रभु सेवा को जोड़कर इस विशाल प्राकृतिक संपदा को 'तेरा तुझको अर्पण' के भाव से लीला नायक श्रीकृष्ण को ही समर्पित किया जा रहा है।

प्रकृति से पुष्टिमार्ग की इस निकटता को हम बहुत गहनता से होली के प्रसंग में अनुभव कर सकते हैं। लगता है, हमारे प्रभु को पुष्पों से अत्यधिक अनुराग है। तभी तो मंदिर का फूलघर इन दिनों जीवंत रहता है। ठाकुरजी प्रायः इन दिनों फूल मंडली में बिराजकर सेवा अंगीकार करते हैं। कहा जा सकता है कि निकुंज सेवा के मिस ठाकुरजी स्वयं को प्रकृति नायक होने की स्थिति में हम भक्तों को आनंदित करते हैं। गुलाब, कदंब, चमेली, जूही, रायबेल, टेसू से सज्जित श्रृंगार सेवा पुष्टि गृहों की ही नहीं, ब्रजमंडल के सभी मंदिरों की विशेषता है। पुष्पों से निर्मित बंगलों के शिल्पियों की कला से हम भी कभी कभी बड़े मनोरथ, उत्सवों में परिचित होते रहते हैं। कुंज एकादशी, चौरासी खंभ और डोल वे प्रसंग हैं, जहां प्रकृति के अलौकिक वैभव के बीच भगवान अपनी लीलाओं से भक्तगण को परिचित कराते हैं। यह पुष्टि गृहों के देवालयों का ही वैभव है, जहां रंगोत्सव के संदर्भ में प्रकृति के समस्त उपकरणों यथा-कुंज, यमुना पुलीन, वनस्पति, वृक्ष, पुष्प मंडली, गिरि गोवर्धन, गोधन को हम प्रत्यक्ष या भाव के स्तर पर अनुभव करते हैं और प्रकृति प्रदत्त हर्बल सुगंधित स्वास्थ्य वर्द्धक रंगों से प्रभु संग होली खेलते हैं। होली का दूसरा दिवस डोल के दर्शनों के माध्यम से प्रकृति के साथ हमारे जुड़ाव का संदेश देने वाला दिवस है। इस अवसर पर प्रभु की श्रृंगार सेवा बड़ी चित्ताकर्षक और रंग चटक, सुगंध भरे होते हैं। यही तो है इन दिनों का आनन्द।

इसी नैसर्गिक आनन्द की अनुभूति को कीर्तन संगीतकार नंददास ने इस प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है-

फूलन को मुकुट बन्यो, फूलन को पिछौरा तन्यो
सोहत अति प्यारे पर, फूलन को सिंगार है।

दर्शनार्थियों के लिए यह एक सुखद अनुभव का विषय है, जब वे इन दिनों निकुंज नायक प्रभु की खजूर और सरसों की डाल सहित आम के मोड़ और कलियों के श्रृंगार से सज्जित छवि के दर्शन करते हैं। वन, कालिंदी, गोवर्धन के साथ विशेष रूप से छौंकर(शमी), कदली खंभ को देख हमें पुष्टि सेवा में वृक्ष, वन, उपवनों की महत्ता का बोध होता है। यहां वृक्षों को इसीलिए 'हरिदास वर्य' कहकर आदर दिया है, जिन्हें श्री हरि ने अपने प्रिय सेवक के रूप में वरण किया है, ऐसे वृक्ष, वन, उपवन। कुंज एकादशी से लेकर त्रयोदशी पर्यंत चौरासी खंभ तक हरित वृक्षावलियों की सेवा में प्रविष्ठि पुष्टि मार्ग में प्रकृति पर्यावरण के पूजन द्वारा उनके संरक्षण व संवर्द्धन का संदेश देती है।

एकादशी व त्रयोदशी सहित डोल के पर्व ब्रजमंडल के द्वादश वन और चौरासी उपवनों की भावना को समेटे हुए हैं। इस विराट वन संपदा के इन दिनों दर्शन वन देवी के पूजन के भाव से किए जाने चाहिए। कीर्तनकार आह्वान भी करते हैं-'पूजन चलौ कदंब वन देवी'।

कहा जा सकता है कि होलिकोत्सव सहित वर्ष पर्यंत पुष्टि गृहों में जिस प्रभु सेवा के विविध रूप दर्शन हमें होने का सौभाग्य मिलता है, वह प्रकृति पर्यावरण के संरक्षण के प्रति आचार्यों की कालजयी अवधारणा और तदनुरूप सेवा में संलग्न विद्वान सेवार्थी जन (मुखिया, भीतरिया तो बहुत सामान्य संबोधन होगा) की सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक है। ऐसे विशाल परिदृश्य को समाहित किए पुष्टिमार्ग का यह एक दृष्टि बिंदु है। अभी तो-'हरि अनंत हरि कथा अनंता'।

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
मंदिर मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

कवर स्टोरी

होली और चुनावी वैतरणी

मेवाड़ के बृजधाम राजसमंद में प्रभु श्री द्वारकाधीश मंदिर के फाग उत्सव के साथ ही राजसमंदीया होली तूफ़ान सोरी उफान पर है, होगी भी क्यों नहीं, भेंट द्वारिका से बिपरजॉय तूफान ने अपुन के राजसमंद की राय सागर को निहाल जो कर दिया। निहाल होंगे भी क्यों नहीं, राय सागर के हिलोरें में अपने पुराने रंजो ग़म भूलकर जन जनार्दन अथाह जल राशि को निहारते निहारते नेताजी के पुराने वादे जो भूलकर बैठा है, वादा तों खारी फीडर चौड़ी होने का भी था, पर अपुन राजसमंद वालों का दिल जो बड़ा है, बड़ा तो राजसमंद संसदीय क्षेत्र भी है, लेकिन हमने अपने पराये में कोई फर्क नहीं किया हैं, हमने किसी को रंग लगाया और किसी को चूना भी।

इधर होली का टाईम और उधर देखो तो जोशी जी सबकी जन्म कुंडलियों को लेकर दिल्ली जो चले गए हैं। दिल्ली तो दिल वालों की या हमारे शाह जी की है, दिल दें तो दे वरना बैरंग भी लौटा दें। बैरंग लौटा दिया तो दिल जलकर खाक हो जाएगा और धुआं उठेगा। धुएं से याद आया कि हमारे डेगाना के चौधरी जी ने जयपुर जाकर धूणी बुझने की घोषणा की, तब से ही धूणी वाले होरियो की टोली पाला बदलने पर आमदा है। कोई उनके गोरे रंग पर गाढ़ा कथई रंग ना लगा दें, रंग से याद आया रंग तो राम नाम का चढ़ा है, चढ़ें ना दूजा रंग, रंग तो पिछले बरस राजसमंद नगरपरिषद में बिना रंग से पार्षदों ने कपड़ा फाड़ होली खेल कर लगाया था। इस खेला के उहापोह में नई नवेली भौजाई होरियो से बिना रंग लगवाए ही रह गई। चुनावी चंग जब से गारंटी में बजने लगीं हैं, तब से शाह जी हवेली में धूम मची है। हमने भी इस धूम में आपके लिए टूटा फूटा कुछ लिखा है, तो अर्ज है-

होली पर कपड़ा फाड़े ये भी अच्छा है
सब दिल का मेल जाड़े ये भी अच्छा है
आ मिलकर भांग चढाले ये भी अच्छा है
पड़ोसन को अपनी बता दें ये भी अच्छा है
दोस्तों ने सबके चेहरे पोत डालें ये भी अच्छा है
घर पर घरवाली नहीं पहचानें ये भी अच्छा है

होली की हार्दिक शुभकामनाएं के साथ

होली है, भई होली है, बुरा ना मानो

चन्द्रशेखर नारलाई
रचनाकार
गोविंदधाम राजसमंद
मो. 9461670670

लघुकथा

होली

आंगन में खूब सारी गुलाल बिखरी हुई थी। जगह जगह से टोलिया की टोलिया रंग गुलाल पिचकारी लिए आई हुई थी। घर के बाहर खूब मौज मस्ती वाले गाने बज रहे थे। देवर भाभियां एक दूसरे के पीछे भाग रही थी, रंग लगाने और होली खेलने, कोई मिठाई खा रहा था तो मिठाई पूरी रंगीन हुए जा रही थी। इतना अच्छा माहौल था। फाल्गुन के गीतों के साथ चंग की धमकार बज रही थी। मुझे भी झूमने का मन कर ही रहा था और जैसे ही नाचने उठी कि आंख खुल गई और देखा सुना आंगन, पूरा कमरा इतना व्यवस्थित की बाट जोह रहा हो, मेहमानों की। होली के दिन सभी अपने अपने घरों में कैद होली की शुभकामनाएं, सिर्फ एक व्हाट्सएप मैसेज भेज करके दे रहे थे। आज होली का कितना खास दिन भी आम लग रहा है।

कंचन राठौड़
सरपंच डूंगाजी का गांव
भीम, जिला राजसमंद

कवर स्टोरी

बदल गए होली मनाने के तरीके और मायने

होली का त्यौहार बड़ा ही प्यारा और रंगीन होता है, वैसे तो होली सबको बहुत पसंद होती है, लेकिन आज होली के मायने बदल गए हैं। कुछ सालों पहले होली का त्यौहार एक उत्सव के जैसा होता था और यह उत्सव एक महीने पहले से ही गांवों शहरों में शुरू हो जाता था, वक्त के साथ-साथ इस त्यौहार ने भी अपने आपको समेट लिया है, आज होली का त्यौहार होता तो है, लेकिन इसमें जो रंगों की बहार और पिचकारी की फुहार अब बहुत कम ही देखने को मिलती हैं।

एक जमाना हुआ करता था जब बच्चे, बूढ़े, युवा, महिलाएं इस त्यौहार को अपने एक अलग ही ढंग और अंदाज से मनाते हुए नजर आते थे। पूरे गांव में होली की एक अलग ही तरह की धूम होती थी, एक महीने तक चलने वाला यह त्यौहार लोगों की खुशियों का इजहार करने का होता था। लोग एक दूसरे को रंग लगाकर अपने प्रेम को प्रदर्शित करते थे, सालभर में अगर किसी से भी कोई झगड़ा या बैर भी होता तो इस पावन पर्व में एक दूसरे के रंग लगाकर और गले मिलकर भुला दिया जाता था। जगह-जगह पर होली के गीत गाए जाते थे, युवाओं की अलग-अलग टोलिया मस्त मलंग होकर रसिया गान करते हुए नजर आते थे।

महिलाएं भी इस त्यौहार को अपने एक अलग ही अंदाज से मनाती हुई हर जगह नजर आ जाती थी, वह भी इस होली के त्यौहार में गीत गाती और गांव के युवाओं को अपने गीतों के द्वारा प्यार से गालियां देती, इसमें कोई भी किसी बात का बुरा नहीं मानता और सभी को सम्मान देकर वह भी मुस्कुराता हुआ ही नजर आता था। हास्य परिहास का यह त्यौहार समाज और परिवार में अपनापन और प्यार बढ़ता हुआ ही दिखाई देता था, दूरियां मिटा कर सभी लोग आपस में मिलते हैं और एक साथ खुशियां मनाते, लेकिन वक्त के साथ-साथ अब इस त्यौहार में भी अब वह पुरानी बात नजर नहीं आती। यह त्यौहार अपने सीमित दायरे में सिमट कर रह गया है। आज के जमाने में कोई भी व्यक्ति किसी पर भी रंग लगाने से भी कतरने लगा है, वह अपने परिवार में इस त्यौहार को बड़े ही सूक्ष्म तरीके से निभाता है या इसे सिर्फ और सिर्फ एक छुट्टी का दिन मानकर अपने कमरे में बंद होकर या तो टेलीविजन देखता है, या फिर अपने मोबाइल में समय व्यतीत करता है और होली की शुभकामनाएं भी सोशल मीडिया पर देकर इतिश्री कर लेता है। आज के जमाने में वह प्यार, वह मस्करापन बहुत कम देखने को मिलता है। यह त्यौहार नाराजगी और दूरियां मिटाने के लिए मशहूर हुआ करता था, लेकिन आज के जमाने में अगर किसी के रंग भी लगा दिया जाता है, तो नाराजगी का सामना करना पड़ता है, इसलिए यह त्यौहार धीरे-धीरे हर जगह कम होता हुआ दिखाई देता है।

होली एक त्यौहार ही नहीं, बल्कि अपने जीवन को आत्मसात करने का दिन है, जो व्यक्ति को सीखाता है कि अगर जीवन में रंग नहीं है, तो जीवन में कुछ भी नहीं, यह दौलत, इज्जत, शोहरत सिर्फ और सिर्फ सांसारिक मोह माया का एक जरिया है। जीवन में अगर आप खुशी चाहते हैं, तो प्रकृति के सभी रंगों में रंग कर अपने जीवन को उल्लास से भरा जा सकता है और वही जीवन है, इसलिए अगर आप भी रंगों से परहेज रखते हैं, तो इस बार होली को आप एक अलग अंदाज से मनाने के लिए तैयार हो जाइए और रंग को तन से रंगने के साथ-साथ अपने मन को भी रंग से रंग डालिए, फिर देखिए आपका जीवन कितना बदलता हुआ आपको ही दिखाई देगा, जिसमें प्रकृति के सारे रंग आपसे जुड़ते हुए नजर आने लगेंगे।

होली की शुभकामनाएं

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली, राजसमंद

प्रकृति व संस्कृति के रंग को धूमिल ना करें 'रंगोत्सव'

होली फाल्गुन महीने की पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला, बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक, बसंती रंगों से सजाने का एक रंगीन पर्व है, जिसकी गरीमा इसमें बरसाते रंगो, खुशनुमा माहौल और परस्पर समरसता से दृष्टिगोचर होती है। होली अपने आप में अनूठा त्यौहार है, जो विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं को एक सूत्र में पिरोकर चलता है। भारत में होली के अपने धार्मिक, ऐतिहासिक और पौराणिक परिपेक्ष्य है, जहां यह रंगोत्सव सनातन धर्म के पन्नों में भक्त प्रहलाद और राधा कृष्ण से जुड़ी पौराणिक प्रेम के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। वहीं मुगलियाकाल में सजा के समय ईद ए गुलाबी या आब ए पासी अर्थात रंगों की बौछार के त्यौहार के रूप में होली का नाम इतिहास में दर्ज है। होली दिव्य, अलौकिक और आत्म जागृति का पर्व माना जाता है, जिसमें विविधता भरे रंग इसे बेहद खास व रंगीन बनाते हैं। होली के विविध रंगों का सार यही है कि सभी पुराने गिले शिकवे भुलाकर, मित्रता की स्थापना हो और सभी एक दूसरे के रंग में रंग जाए और राग, रंग, मिठास व उल्लास के पर्व में घुल मिल जाए।

रंग हमारे जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं, लेकिन विगत कुछ वर्षों से रंगों की पवित्रता को भी हानिकारक केमिकल और शीशा जैसे रसायनों का ग्रहण लग चुका है। कृत्रिम रंगों में मिलने वाले लेड क्रोमियम, सिलिका आदि की मिलावट के चलते घातक स्वास्थ्य प्रभाव देखने में आ रहे हैं। आज होली के दौरान कृत्रिम जहरीले रंगों के प्रचलन से आंखों में इंफेक्शन, त्वचा रोग, अस्थमा और एलर्जी जैसे रोगों की अधिकता सर्वाधिक देखने में आती है। वर्तमान में बदलते परिवेश के साथ होली का स्वरूप भी बहुत हद तक परिवर्तित हो चुका है। आज की महानगरी संस्कृति की आपाधापी और भागदौड़ में रंगोत्सव/होली का त्यौहार भी औपचारिकता और दिखावे की भेंट चढ़ता जा रहा है। वहीं 'बुरा ना मानो होली है' कहकर सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करने वाली मदहोश युवा मंडली ने होली जैसे पावन पर्व को अमर्यादित बना दिया है, जिसके चलते आज होली के अवसर पर विभिन्न पक्षों में मनमुटाव व अश्लीलता से झगड़े उत्पन्न हो रहे हैं। पवित्र पावन पर्व रंगोत्सव में आई इन विकृतियों को दूर करने के लिए हमें आत्ममंथन करना होगा और होली के वास्तविक अर्थ को आत्मसात करना होगा। क्योंकि होली मात्र रंगों का त्यौहार नहीं है, बल्कि बहुत से विविध और अनूठे रंगों का पारस्परिक संगम भी है।

परंपरा के अनुसार होलिका दहन के उत्सव में अलाव जलाया जाता है, जो वनों की कटाई में योगदान देता है। होली के त्यौहार के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, पार्टिकुलेट मैटर का स्तर प्रकृति में बढ़ जाता है, जिससे वायु की गुणवत्ता खराब हो जाती है। वहीं होली दहन के अगले दिन जैविक रंगों का प्रयोग न कर अत्यधिक व्यवसायीकरण में लगी हुई कंपनियों द्वारा तैयार रासायनिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। यह अत्यधिक जहरीले प्राप्त रंग प्राकृतिक परिस्थितियों में आसानी से नष्ट नहीं होते और पारंपरिक अपशिष्ट जल उपचार विधियों द्वारा इन्हें हटाया भी नहीं जा सकता। इस कारण न केवल हमारा वायुवीय पारिस्थितिक तंत्र बल्कि स्थलीय एवं जलीय पारिस्थितिक तंत्र असंतुलित हो जाता है। इसलिए हमें 'इको फ्रेंडली' होली मनाने के लिए प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करना चाहिए तथा पानी की भारी किल्लत को ध्यान में रखते हुए, पानी की बजाय सुखे व प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार हमें भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इस पुरातन त्यौहार होली को जीवन में सब रंग भरने के रूप में मनाया जाना चाहिए तथा हमें प्रकृति एवं संस्कृति के अनुकूल आचरण कर जीवन की ऊर्जा का सकारात्मक प्रदर्शन करते हुए उमंग और उत्साह से जीवन की हर पल को रंगीन बनाने के यत्न करने चाहिए।

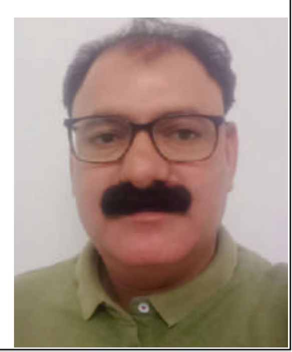

कैलाश सामोता 'रानीपुरा'
लेखक एवं स्वतंत्र विचारक
शिक्षक, आमेट, राजसमंद

होली लाल दहीबड़े

दिवाली पर अमीर खुश होता है और होली पर गरीब। अमीर की दिवाली जगमगाती है और गरीब की होली हंसाती है। अमीर दिवाली मनाता है, दिखाने के लिए और गरीब होली खेलता है जिन्दगी के अभाव में खुश रहने के लिए। दिवाली पर गरीब के पास दिखाने के लिए कुछ नहीं होता और अमीर को होली पर दिखाने का मौका नहीं मिलता। दमकते दोनों ही हैं। दिवाली पर अमीर और होली पर गरीब। दिवाली की आहट नवदुर्गा से और होली की आहट होली के डांडे से। होली की आहट योजना आयोग की तरह सभी को सक्रिय कर देती है। होली कैसे खेलनी है, किसे रंगना, किसे छोड़ना/ छेड़ना और किसे रगड़ना है। किसे रंगहीन बनाना है। होली पर मुर्दानगी का कोई काम नहीं। सब खुश नज़र आते हैं।

चौपाल पर मीटिंगों का दौर शुरू हुआ। खेलनीति बनने लगी। खेलों की दुर्दशा का कारण भी यही नीति रही है, लेकिन 'तो कू और नई मौकू ठौर नई।', पिछले दिनों वर्मा, कर्मा, और अन्य लोग नाथद्वारा में श्रीनाथजी मंदिर गए, वहां के दहीबड़े खाकर आए थे। तय हुआ होली पर दही बड़े हो जाएं। मिठाई की बात पर गुलाब जामुन पर सहमति नहीं बन पाई। फौज के लिए गुलाब जामुन? बाजार की गुजिया ठीक रहेगी। रोज गालियों की प्रक्टिस होने लगी। गालियों का पैटर्न तैयार हुआ, जिसमें मां-बहन को छोड़ बाकी गालियों का समावेश खुशी-खुशी किया गया। साइकिल वाले से लेकर गधे वाले तक की। गुजिया और गाली के बिना होली कैसी? होली में नाली का अनूठा रंग होता है। इसमें स्वैच्छा से कुछ नहीं होता, जो कुछ होता है जबरदस्ती। जो होली में गधे पर बैठता पार्टी उसके यहां होती। इस बार बारी-बारी से सभी को बिठाया गया। किसी ने गुजिया तो किसी ने दहीबड़े का हंडा चढ़ा दिया। बहरहाल, होली पर पीने वाले खुश, पिलाने वाले खुश, नंगा खुश, नंगा करने वाले खुश, कपड़े फाड़ने वाले खुश, कपड़े फटवाने वाले खुश, गिरने वाले खुश, गिराने वाले खुश, लौटने वाले खुश, लुढ़काने वाले खुश, चखना-चखने वाले खुश, चखना बेचने वाले खुश, गालियां देने वाले खुश, गालियां खाने वाले खुश, गधे पर बैठने वाला खुश, बिठाने वाले खुश। होली का डांडा ना हुआ, खुशी का पैगाम हो गया। बाबू का डीए, वेटर की बख्शीश, बणिये का ब्याज, नेता का मंत्री पद और गरीब के लिए गुड़ का डिल्ला हो गई होली। युद्ध नहीं फिर भी युद्ध जैसी तैयारी। हर आदमी हुरिआने की तैयारी में। मन से, तन से, गाली से, मिठाई से, प्रेम से, और तो और गुस्से में भी, होली का रंग चढ़ा था।

घेरदार घाघरों घुमाय के चली, गली की लली।
सौ कली को घाघरो नाय, पेटीकोट पर चुन्नी डाल के चली लली।
मुहल्ला दर मुहल्ला गाली पे गाली चली।
गधे पे शेख चिल्ली और पीछे बेवड़ों की बारात चली।

माटी महल के निवासी भी होली खेल कर छक लिए। जिस गंदे पानी में नहाते थे, उसी पानी में नहाकर खुश हो लिए। खुशी इसलिए ज्यादा थी जो नाक बंद करके निकलते थे, वे भी उसी पानी में नहा लिए। आज किसी में हीनता का भाव नहीं था, सबके ग्रहों में गंदा पानी उच्च भाव में बैठा था। दोपहर होते-होते सब थक चुके थे। छक चुके थे। मन-मन भरके जी चुके थे। गालियां सब चुक गईं। गुजिया और दहीबड़े का इंतजार था। गुजिया तो निपट गई, बच गए दही बड़े। अच्छा बनाने के चक्कर में मिठास कम, खटास ज्यादा बढ़ गई। अब क्या किया जाए? नशे में आदमी उदार हो जाता है। उसे सब गरीब और खुद अमीर दिखाई देने लगता है। एक सुझाव टपक पड़ा। माटी महल के निवासियों को दही बड़े खिला दिए जाएं।

कौन कहता है, होली गरीबों की होती है? होली अगर गरीबों की होती तो, होली के बाद जरूर पेट भर जाता? खाली पेट होली खेली तो जा सकती है, लेकिन खाली पेट सोया नहीं जा सकता?

भूख में कंडे पापड़ हो जाते हैं। फिर दही बड़े तो दही बड़े थे। नखरे उनके होते हैं, जिनका पेट भरा होता है। दही बड़े की खटास, भूख में मिठास सी लगती है। यह खटास पेट भरने और खराब होने के लिए माकूल थी। इस खटास से दही बड़े का रंग पेट में पहुंचते ही लाल हो गया। जो भूख से बे हाल थे? अब पेचिस से परेशान हैं। माटी महल निवासियों के मुंह से निकलने लगी- होली आई रे बना, तेरी...।

सुनील जैन 'राही'
वरिष्ठ साहित्यकार, नई दिल्ली
मो. 9810960285

सनातन धर्म व विज्ञान

सनातन धर्म की परिभाषा बहुत प्राचीन है और इसका अस्तित्व भी सृष्टि के प्रारंभ से है। कहा जा सकता है कि जो वैचारिक सांस्कृतिक अवधारणाएं शाश्वत हैं, चिर स्थायी हैं, जिनका न आदि और न ही अंत है, वे सनातन धर्म के नाम से समग्रतः अभिज्ञापित की जा सकती हैं। श्री नारायण की आज्ञा से उन धारणाओं को ईश्वरीय तत्व के रूप में ब्रह्मा ने प्रकटाया और तब वे मानव और उसके द्वारा ईश्वरीय आज्ञा के अनुरूप विविध युगों में जीवन जगत् के कल्याण के लिए विभिन्न नियमों और आचार संहिता के रूप में संसार के श्रेष्ठ रूप को रचती रहीं। विज्ञान में जिस अणु तत्व की स्थिति का उल्लेख आता है, वह भी शाश्वत है, स्थायी है और केवल रूप परिवर्तन से जगत् के सतत् विकास का कारण बनता है।

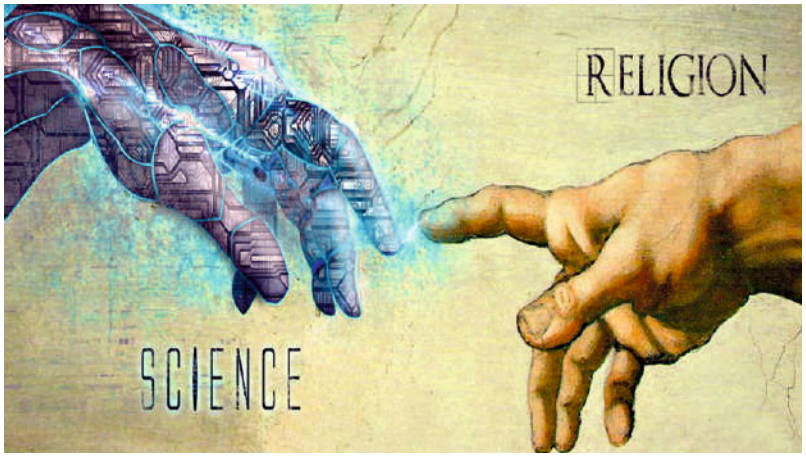

यह कहा जाना उचित होगा कि विज्ञान में शरीर एक पदार्थ है। यह पदार्थ शरीर का धर्म है। इसकी प्रकृति नाशवान है। जब जब मनुष्य पदार्थ की मूल प्रकृति को चुनौती देता है, तो उस पदार्थ के समस्त धर्मों के नाश की संभावना प्रबल हो जाती है। धर्म की मूल प्रकृति से छेड़छाड़ पर समस्त प्रकार के सद्धर्मों के अस्तित्व पर संकट आ जाता है। गत शताब्दी के नवें दशक से पूर्व के वर्षों में धर्म की मूल प्रकृति से छेड़छाड़ का अवसर बना था। जब रामलीला को अपने ही घर आंगन से निष्कासित होने के संकट का कष्ट समस्त दिव्य प्रज्ञावान भारतीय मनीषा को झेलना पड़ा था। तब भारतीय संस्कृति के उन्नायकों, भक्तों, सेवकों और आमजन ने अपनी संस्कृति में व्याप्त 'सनातन आत्मा के अस्तित्व' का बीड़ा उठाया, जिससे व्याप्त सामूहिक ऊर्जा ने 92वें के वर्ष में एक सैलाब को जन्म दिया। शाश्वत और चिर स्थायी विज्ञान सम्मत सनातन धर्म से एकता के उस सैलाब ने समस्त कुल दोष जन्य प्रयासों को जवाब दिया। उसी के परिणाम स्वरूप रामलला के विशाल प्रकल्प मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के क्षणों से रुबरू होने का अवसर हम पा रहे हैं। वैज्ञानिक सोच सम्पन्न सनातन धर्म के अनुसरण का यही तो भव्य दृश्य है। कहां भी गया है न-

कुल क्षयेप्रणश्यंति, कुल धर्मा सनातनः
धर्मे नष्टे कुलं कत्स्नं, धर्मोऽ भिभवच्युत्

(जब कुल में दोष लगता है तो वहां समस्त प्रकार के धर्मों का नाश हो जाता है। केवल सनातन आत्मा का अस्तित्व रह जाता है।)

सनातन धर्म के अवयवों की चर्चा करते हुए शास्त्रों में बताया गया कि जीवन जीने की समग्र चेतना और प्रवृत्ति जिसकी कोई भौगोलिक सीमा नहीं, जब किसी एक अध्यात्म सम्मत नियम और आचार संहिता में भाव के धरातल पर हमें बांधती है, तो हमें अपने महान लक्ष्यों की प्राप्ति से कोई नहीं रोक सकता। साइंस ऑफ लाइफ भी 'चेतना' की महत्ता बतलाती है। यह चेतना व्यक्ति और जन जन को मानसिक व शारीरिक संतुलन से एक भाव अनुशासन में बांधने का काम करती है। यही योग है। राम लला मन्दिर के निर्माण की प्रक्रिया में अंतःप्रेरणा या चेतना से जो स्वानुशासित धर्म का हमें संबल मिला, वही सनातन धर्म था, जिसने हमें एक भाव सूत्र में बांधा। वह समय था, जब सम्पूर्ण राष्ट्र में एक ही आह्वान गूंजता था, 'राम लला हम आएंगें, मन्दिर वहीं बनायेंगे। 'सनातन चेतना की इसी साइन्स ऑफ लाइफ ने हमें आज यह शुभ दिन दिखाया है।

सनातन धर्म को परिभाषित करते हुए कहा भी गया कि मूल रूप से प्रकृति व योग्यता सहित क्रमबद्ध जीवनचर्या से मानवहित में श्रेष्ठ कार्य करना ही सनातन धर्म है। यह वस्तुतः विज्ञान सम्मत दृष्टिकोण (Scientific attitude) है, जिसने हमें शीर्ष नेतृत्व, कुशल सिपहसालारों की व्यूह रचना और निष्ठावान जन सैनिकों के प्रयासों से सफलता दी। वस्तु, व्यक्ति, प्रकृति के व्यवहार का संज्ञान प्राप्त करना, इस ज्ञान को सामाजिक व धार्मिक व्यवस्था के कल्याण हेतु क्रियान्वित करना और स्थिति परिस्थिति का सम्यक् अवलोकन, विश्लेषण कर परित्राणाय साधुनां, विनाशाय च दुष्कताम्, धर्म संस्थापनार्थाय रामलीला की पुनर्प्रतिष्ठा विज्ञान सम्मत शाश्वत सनातन सोच के वश की बात ही हो सकती है।

प्रश्न उठता है, विज्ञान की प्रकृति क्या है? जहां नियमों, सिद्धांतों, सूत्रों आदि में संदेह न हो,जो सत्य पर आधारित हो, तथ्यों का विश्लेषण करता हो, परिकल्पना करता हो, तटस्थ हो, वस्तुनिष्ठ हो, समस्या का स्पष्ट हल करता हो और एक्टिविटी बेस्ड हो, वही विज्ञान है। समग्रता में शाश्वत या सनातन धर्म की भी यही प्रकृति है। इन कसौटियों पर यदि रामलला मंदिर की भव्य कल्पना को मूर्त रूप देने की प्रक्रिया को देखा जाए, तो यह सनातनी एप्रोच भी है और वैज्ञानिक कोपरनिकस की Heliocentric theory का सार भी। हमारा यह समस्त सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सनातन धर्म और विज्ञान की संयुक्त एप्रोच का भव्य व सुंदर उदाहरण है। बौद्धिक, नैतिक, व्यावहारिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य जो शाश्वत सनातन धर्म के तत्व हैं, कोपरनिकस की थ्योरी में भी हैं। अंतर बस इतना सा कि जिस बात को कोपरनिकस ने 16वीं शताब्दी में कहा, वह सनातन सोच ने सृष्टि के प्रारंभ में ही कह दिया।

समय, देश, काल से ऊपर ऐसा चिरंतन जीवन दर्शन और क्रम को आज के युग में पुनर्भाषित करने की आवश्यकता है। यही हमारी भारतीय सांस्कृतिक मनीषा की जीवनदायिनी शक्ति होगा। इति!

डा. राकेश तैलंग
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
राजसमंद, 9460252308

होली उत्सव की जीवंतता

होली प्राचीन हिंदू त्यौहारों में से एक है और यह ईसा मसीह के जन्म के कई सदियों पहले से मनाया जा रहा है। होली का वर्णन जैमिनि के पूर्वमिमांसा सूत्र और कथक ग्रहय सूत्र में भी है। प्राचीन भारत के मंदिरों की दीवारों पर भी होली की मूर्तियां बनी हैं। ऐसा ही 16वीं सदी का एक मंदिर विजयनगर की राजधानी हंपी में है। इस मंदिर में होली के कई दृश्य हैं, जिसमें राजकुमार, राजकुमारी अपने दासों सहित एक दूसरे पर रंग लगा रहे हैं।

कई मध्ययुगीन चित्र, जैसे 16वीं सदी के अहमदनगर चित्र, मेवाड़ पेंटिंग, बूंदी के लघु चित्र, सब में अलग अलग तरह होली मनाते देखा जा सकता है। होली भारतीय त्यौहारों के बहुरूपदर्शक में एक ऐसा त्यौहार है, जो अपने उल्लास, रंग के दंगल व खुशी की असीम भावना के लिए जाना जाता है। रंगों के त्यौहार के रूप में जाना जाने वाला यह उत्सव भौगोलिक सीमाओं को पार कर विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को हंसी और उल्लास के सामूहिक स्वर में एकजुट करता है। जैसे-जैसे हम इस प्राचीन त्यौहार की समृद्ध कथावस्तु में उतरते हैं, हम इसके उत्सव के पीछे के असंख्य कारणों को उजागर करते हैं और आधुनिक समय में इसके स्थायी महत्व का पता लगाते हैं।

‘रंगों के त्यौहार’ के तौर पर मशहूर होली का त्यौहार फाल्गुन महीने में पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। इस दिन तेज संगीत और ढोल के बीच एक दूसरे पर रंग और पानी फेंका जाता है। भारत के अन्य त्यौहारों की तरह होली भी बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। प्राचीन पौराणिक कथा के अनुसार होली का त्यौहार, हिरण्यकश्यप की कहानी जुड़ी है। हिरण्यकश्यप प्राचीन भारत का एक राजा था, जो कि राक्षस की तरह था। वह अपने छोटे भाई की मौत का बदला लेना चाहता था, जिसे भगवान विष्णु ने मारा था। इसलिए स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिए उसने सालों तक प्रार्थना की। आखिरकार उसे वरदान मिला। लेकिन इससे हिरण्यकश्यप खुद को भगवान समझने लगा और लोगों से खुद की भगवान की तरह पूजा करने को कहने लगा। इस दुष्ट राजा का एक बेटा था, जिसका नाम प्रहलाद था और वह भगवान विष्णु का परम भक्त था। प्रहलाद ने अपने पिता का कहना कभी नहीं माना और वह भगवान विष्णु की पूजा करता रहा। बेटे द्वारा अपनी पूजा ना करने से नाराज उस राजा ने अपने बेटे को मारने का निर्णय किया। उसने अपनी बहन होलिका से कहा कि वो प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठ जाए, क्योंकि होलिका को वरदान था कि वह आग में जल नहीं सकती थी। उनकी योजना प्रहलाद को जलाने की थी, लेकिन उनकी योजना सफल नहीं हो सकी, क्योंकि प्रहलाद सारा समय भगवान विष्णु का नाम लेता रहा और बच गया, पर होलिका जलकर राख हो गई। होलिका की ये हार बुराई के नष्ट होने का प्रतीक है। इसके बाद भगवान विष्णु ने हिरण्यकश्यप का वध कर दिया, इसलिए होली का त्यौहार, होलिका की मौत की कहानी से जुड़ा हुआ है। इसके चलते भारत के कुछ राज्यों में होली से एक दिन पहले बुराई के अंत के प्रतीक के तौर पर होली जलाई जाती है। शक्ति पर भक्ति की जीत की ख़ुशी में यह पर्व मनाया जाने लगा। साथ में यह पर्व संदेश देता है कि काम, क्रोध, मद, मोह एवं लोभ रुपी दोषों को त्यागकर ईश्वर भक्ति में मन लगाना चाहिए।

होली से जुड़ी लोकप्रिय कहानियों में से एक भगवान कृष्ण की लीला के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपनी चंचल हरकतों के लिए जाने जाने वाले शरारती देवता हैं। किंवदंती है कि कृष्ण, एक युवक के रूप में, वृंदावन के गांव में राधा और अन्य गोपियों पर रंग छिड़कने में आनंद लेते थे। यह चंचल परंपरा होली के जीवंत त्यौहार में विकसित हुई, जो बुराई पर अच्छाई की जीत, बसंत के आगमन और प्रेम के खिलने का प्रतीक है। कुछ हिस्सों में इस त्यौहार का संबंध बसंत की फसल पकने से भी है। किसान अच्छी फसल पैदा होने की खुशी में होली मनाते हैं।

होली को 'वसंत महोत्सव' या 'काम महोत्सव' भी कहते हैं। होली का त्योहार राधा-कृष्ण के पवित्र प्रेम से जुड़ा हुआ है। श्री कृष्ण और राधा की बरसाने की होली के साथ ही होली के उत्सव की शुरुआत हुई। आज भी बरसाने और नंदगाव की लट्ठमार होली विश्व विख्यात है। शिवपुराण के अनुसार हिमालय की पुत्री पार्वती शिव से विवाह हेतु कठोर तपस्या कर रहीं थीं और शिव भी तपस्या में लीन थे। इंद्र का भी शिव-पार्वती विवाह में स्वार्थ छिपा था कि ताड़कासुर का वध शिव-पार्वती के पुत्र द्वारा होना था। इसी वजह से इंद्र आदि देवताओं ने कामदेव को शिवजी की तपस्या भंग करने भेजा। भगवान शिव की समाधि को भंग करने के लिए कामदेव ने शिव पर अपने 'पुष्प' बाण से प्रहार किया था। उस बाण से शिव के मन में प्रेम और काम का संचार होने के कारण उनकी समाधि भंग हो गई।इससे क्रुद्ध होकर शिवजी ने अपना तीसरा नेत्र खोल कामदेव को भस्म कर दिया। शिवजी की तपस्या भंग होने के बाद देवताओं ने शिवजी को पार्वती से विवाह के लिए राज़ी कर लिया। कामदेव की पत्नी रति को अपने पति के पुनर्जीवन का वरदान और शिवजी का पार्वती से विवाह का प्रस्ताव स्वीकार करने की खुशी में देवताओं ने इस दिन को उत्सव की तरह मनाया। यह दिन फाल्गुन पूर्णिमा का ही दिन था। इस प्रसंग के आधार पर काम की भावना को प्रतीकात्मक रूप से जला कर सच्चे प्रेम की विजय का उत्सव मनाया जाता है।

प्राचीन काल में होली के रंग टेसू या पलाश के फूलों से बनते थे और उन्हें गुलाल कहा जाता था। वो रंग त्वचा के लिए बहुत अच्छे होते थे। क्योंकि उनमें कोई रसायन नहीं होता था, लेकिन समय के साथ रंगों की परिभाषा बदलती गई। आज के समय में लोग रंग के नाम पर कठोर रसायन का उपयोग करते हैं। इन खराब रंगों के चलते ही कई लोगों ने होली खेलना छोड़ दिया है। हमें इस पुराने त्यौहार को इसके सच्चे स्वरुप में ही मनाना चाहिए।

होली एक दिन का त्यौहार नहीं है। कई राज्यों में यह तीन दिन तक मनाया जाता है। प्रथम, पूर्णिमा के दिन एक थाली में रंगों को सजाया जाता है और परिवार का सबसे बड़ा सदस्य बाकी सदस्यों पर रंग छिड़कता है। द्वितीय दिन को पूनो भी कहते हैं। इस दिन होलिका के चित्र जलाते हैं और होलिका और प्रहलाद की याद में होली जलाई जाती है। अग्नि देवता के आशीर्वाद के लिए मांए अपने बच्चों के साथ जलती हुई होली के पांच चक्कर लगाती हैं। तृतीय दिन को 'पर्व' कहते हैं और यह होली उत्सव का अंतिम दिन होता है। इस दिन एक दूसरे पर रंग और पानी डाला जाता है। भगवान कृष्ण और राधा की मूर्तियों पर भी रंग डालकर उनकी पूजा की जाती है।

समकालीन समय में, होली अपने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल से आगे बढ़कर एक वैश्विक घटना बन गई है, जिसे सभी पृष्ठभूमि के लोग मनाते हैं। समावेशिता, आनंद और सौहार्द का इसका संदेश भाषाई, धार्मिक और भौगोलिक बाधाओं को पार करते हुए दुनिया भर के लोगों के साथ गूंजता है। तेजी से विभाजित होती दुनिया में, होली विविधता को अपनाने और सभी व्यक्तियों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने के महत्व की याद दिलाती है। इसके अलावा, इन दिनों होली पर्यावरण चेतना का प्रतीक भी बन गई है, जिसमें सिंथेटिक रंगों और पानी की बर्बादी के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। समुदाय फूलों, सब्जियों और मसालों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके और पर्यावरण की रक्षा के लिए पानी के उपयोग को कम करके 'ग्रीन होली' मनाने के लिए एक साथ आ रहे हैं।

कुसुम अग्रवाल
90- महावीर नगर, 100 फ़ीट रोड, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9461179465
kusumagarwal0702@gmail.com

सब शरीक़े जुर्म हैं

पाक़ीज़ा खुले आम इल्ज़ाम लगाती है, किसी को नहीं बख़्शती सिपहिया से रंगरजवा तक सभी दुपट्टा बेचने वाले से बजजवा तक । असली विषय पर आएं उस से पहले इस को जान लेना आवश्यक है कि इक मान्यता है कि राजनीति और वैश्यावृति दुनिया के सब से प्राचीन धंधे हैं और इन दोनों में काफी समानताएं हैं। अमर प्रेम का नायक कहता है कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना , हमको जो ताने देते हैं हम खोए हैं इन रंगरलियों में, हमने उनको छुप छुप के आते देखा इन गलियों में । बदनाम बस्ती में शरीफ़ लोग रात को अंधेरे में छुपते छुपाते जाते थे, रईस खानदानी लोग घर पर महलों में बुलवा नचवाते थे। खिलौना फिल्म में तो नाचने वाली पागलपन की दवा बन गई थी। ख़ामोशी से उमराव जान तक कितनी फ़िल्में अपने देखी हैं। वैश्या जिस्म बेचती है कुछ लोग अपना ईमान बेचते हैं और कुछ उनका ईमान ख़रीद कर बदले में मनचाहा वरदान देते हैं। लोकतंत्र में कुछ लोग हैं जो न रोटी बनाते हैं न रोटी खाते हैं वो रोटी से खेलते हैं, किसी कवि ने पूछा ये तीसरा व्यक्ति कौन है, देश की संसद इस पर मौन है। चुनावी बॉन्ड शायद वही चुप्पी है, जिसकी आवाज़ की गूंज अभी भी साफ सुनाई नहीं देगी भले चुनाव आयोग की वेबसाइट पर नाम लिख भी दिए जाएं। चुनावी बॉण्ड किसी खरीदार और भुनाने वाले की गोपनीय राज़ की बात घोषित की गई थी बैंक का काम था किसी बिचौलिए की भूमिका निभाना। बैंक राज़ी हो गए अपनी आंख बंद कर खरीदार और जिसको मिला और जिस ने भुनाया उसकी पहचान किसी को खबर नहीं होने देने पर। अंधेर नगरी चौपट राजा की निशानी नहीं है सिर्फ बल्कि जिस को देश के संविधान कानून और लोकतंत्र की सुरक्षा का फ़र्ज़ निभाना था उसको ये दिखाई नहीं दिया तब तक जब तक किसी ने उसकी चौखट पर दस्तक नहीं दी ।

2017 में 2017 - 2018 के बजट में प्रावधान किया गया और 2 जनवरी 2018 को वित्त मंत्रालय ने घोषणा जारी की , 15 फरवरी 2024 को सर्वोच्च न्यायालय ने इस को असवैंधानिक बताया और इसे देश की जनता के सूचना के अधिकार का उलंघन बताया । गंभीर सवाल ये है कि सत्ताधारी अथवा सभी राजनैतिक दल जब चाहे मनमानी करते रहें लेकिन जिन संस्थाओं को न्याय और जनता के अधिकारों एवं लोकतान्त्रिक प्रणाली की सुरक्षा करनी है जिनको संविधान ने बनाया ही इस मकसद से है उनको खुद ये सब देखना नहीं चाहिए बल्कि कोई गैर सरकारी संस्था असोसिएशन ऑफ डेमोक्रैटिक राईट को अदालत जाकर मुकदमा दायर करना चाहिए ऐसी अंधेर नगरी बन गया है देश। अब भी सिर्फ नाम बताने से क्या सब ठीक हो गया मान लिया जाएगा। अनुचित असंवैधानिक ढंग से हुए लेन देन पर कोई करवाई नहीं तो आम नागरिक पर ही हमेशा तलवार लटकती रहना किसलिए जो अपनी आमदनी का हिसाब नहीं बता सकता तो अपराधी घोषित किया जाता है। ईडी क्या सिर्फ सत्ता विरोधी को पकड़ने को बदले

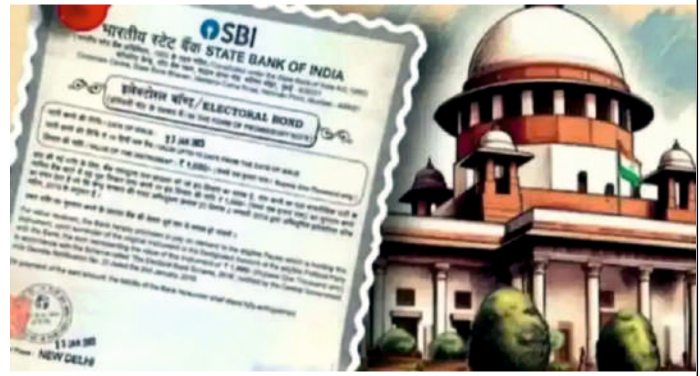

की भावना से कार्य करती है किसी सत्ताधरी किसी सरकार समर्थक कारोबारी की तरफ देखती तक नहीं है।

भारतीय स्टेट बैंक पहले महीनों लगने का बहाना बनाता है बाद में इक दिन में आंकड़े दे सकता है जब अदालत कड़ा रुख अपनाती है यही अपने आप में किसी की विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा करती है। अब तो दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल सच साबित होती लग रही है-

अब किसी को भी नज़र आती नहीं कोई दरार,
घर की हर दीवार पर चिपके हैं इतने इश्तिहार।
आप बचकर चल सकें ऐसी कोई सूरत नहीं,
रहगुज़र घेरे हुए मुरदे खड़े हैं बेशुमार।
रोज़ अख़बारों में पढ़कर ये ख़्याल आया हमें,
इस तरफ आती तो हम भी देखते फस्ले - बहार।
मैं बहुत कुछ सोचता रहता हूं पर कहता नहीं,
बोलना भी है ,मना सच बोलना तो दरकिनार।
इस सिरे से उस सिरे तक सब शरीके जुर्म हैं,
आदमी या तो ज़मानत पर रिहा है या फ़रार।
हालते इनसान पर बरहम न हों अहले-वतन,
वो कहीं से ज़िंदगी भी मांग लाएँगे उधार।
रौनक़े जन्नत ज़रा भी मुझको रास आई नहीं,
मैं जहन्नुम में बहुत खुश था मेरे परवरदिगार।
दस्तकों का अब किवाड़ों पर असर होगा ज़रूर,
हर हथेली ख़ून से तर और ज़्यादा बेक़रार।

(साये में धूप से आभार सहित)

अब वास्तव में दरख़्तों के साये में धूप लगती है।

डॉ. लोक सेतिया
एससीएफ 30, मॉडल टाउन
फतेहाबाद, (हरियाणा) 125050
मो. 9416792330

मेडिकल साइंस के क्षेत्र में भोजपुरी गायकों का योगदान

भोजपुरी गायक काफी जुझारू और ख़ोजी प्रवृत्ति के होते हैं। मानवीय अंगों पर शोध और प्रयोग करने में वर्ल्ड ह्यूमन फिजियोलॉजी जिस मुकाम तक पहुँच पाने में कामयाब नहीं हो पाई है, वहाँ भोजपुरी गायकों ने यौवन, होठ, आंखें, कमर आदि स्त्री अंगों सहित काजल, नथुनिया, लिपस्टिक जैसे सौंदर्य प्रसाधनों पर भी शोध और अनुसंधान कर कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। इन दिनों भोजपुरी गायक और गीतकारों के सृजन और शोध का विषय ढोढ़ी अर्थात नाभि है। 'देख रहा है बिनोद' और भुवन के 'कच्चा बादाम' से ज्यादा ट्रेंड वर्तमान में भोजपुरी भाषा वाले ढोढ़ी केंद्रित गीतों का है।

मूर्ति विसर्जन, डीजे और शादी के मुबारक मौके पर ढोढ़ी अंग का महिमा मंडन करने वाले भोजपुरी गीतों की तेज ध्वनि के श्रवण से इन शोधकर्ताओं की कड़ी मेहनत का अंदाजा लगाया जा सकता है। इन ख़ोजी संगीत सेवियों के योगदान पर भोजपुरी संस्कृति और सभ्यता को गर्व करना लाजिमी है। ढोढ़ी अथवा नाभि की महत्ता जीवन के दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। पौराणिक कथाओं की चर्चा करें, तो दशानन रावण की मृत्यु का केंद्र ढोढ़ी ही था। यदि विभीषण ने इस राज का पर्दाफाश ना किया होता, तो श्रीराम कन्फ्यूजन में बाण से दशानन की गर्दन रेतते-रेतते थक जाते, किंतु वध नहीं कर पाते।

जीव विज्ञानियों के अनुसार गर्भावस्था के दौरान प्लासेंटा अथवा अपरा के माध्यम से माता से शिशु में पोषण का

केंद्र ढोढ़ी ही होता है। इतिहासकारों ने रावण की ढ़ोढ़ी और जीव विज्ञानियों ने शिशुओं की ढ़ोढ़ी पर रिसर्च करने से परहेज़ किया तो जिज्ञासु भोजपुरी लोक गायकों ने ढ़ोढ़ी पर शोध करने की जिम्मेदारी उठा ली है।

इन गायकों और गीतकारों की शोध से स्पष्ट है कि ढ़ोढ़ी चाटने से बुखार सहित कई बिमारियां दूर हो जाती है। भोजपुरी गायक की मानें तो इन दिनों युवा कोविड 19 से भी ज्यादा खतरनाक ढ़ोढ़ी चाटने की बीमारी से पीड़ित और प्रभावित हो रहे हैं। कुछ गायकों ने भौगोलिक विस्तार के तहत आयतन और क्षेत्रफल निर्धारित करते हुए ढ़ोढ़ी की तुलना गोल गप्पे अथवा कुआं तक से कर डाली है। ढ़ोढ़ी के क्रांतिकारी शोध पर भोजपुरी पुरुष गायकों के साथ-साथ महिला गायिका भी कंधे से कंधा मिलाकर साथ दे रही हैं। नाभि ज्ञान बांटने में भरपूर ऊर्जा का इस्तेमाल करते हुए भोजपुरी गायिका ढ़ोढ़ी की साइज़, श्रृंगार और उपयोगिता से समाज को जागरूक करने में अहम् भूमिका निभा रही हैं। सेंसर रूपी मानक संस्था के अभाव में वायरल होने की चाहत में अकर्णप्रिय भोजपुरी संगीत को पुष्पित-पल्लवित कर रहे नाभि के शोधार्थियों (लोक गायकों) का वर्तमान और भविष्य दोनों ही उज्जवल प्रतीत होता है।

रचनात्मक गतिविधियों के लिए ऐसे भोजपुरी गायकों को ग्रैमी अवॉर्ड अथवा म्यूजिक अवॉर्ड्स मिले न मिले, लेकिन वह दिन दूर नहीं, जब स्वीडन की नोबेल पुरस्कार संगठन मानवीय अंगों पर गहन जानकारी और शोध के लिए शरीर क्रिया विज्ञान एवं चिकित्सा क्षेत्र में इनको सम्मानित करने के लिए उच्च स्तरीय निर्णय ले सकती है।

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार, खगड़िया (बिहार)
मो. 7765954969

त्रिपथगा के सैकत पर

त्रिपथगा के सैकत पर, लिखना तेरा नाम।
हर शाम यही था काम, लिखना तेरा नाम।।
लिखता था जैसे मत्त लहरें छू न सकेगा
कोई बवंडर, झंझावात बन, पी न सकेगा ।
जैसे कोई शिलालेख, बन जीवन का संदेश
शफरी-सा व्याकुल मन अब जी न सकेगा।।
इस मधुर अंकन का अब नहीं होगा विराम।
हर शाम यही था काम, लिखना तेरा नाम।।
तबसे तेरा नाम लिखा, जैसे कोई मन के गीत
फूलों के सौरभ में, तितली के उर्मी, मनमीत।
गगन में मेघ लहराए, मेघ में चाँद शरमाए
रतजगा कर बाट जोहता, तारिकाओं की प्रीत।।
शत-शत पीढ़ी भी, दुहराएगी तेरा नाम।
हर शाम यही था काम, लिखना तेरा नाम।।

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद
लेखक शेष कितना तमस
राजवंशी नगर, पटना (बिहार)

आवाज की दुनियां - रेडियो

किताबें पढ़ी थी मैंने भी कई लेकिन
मैं अपने दायरे में रहकर बात करता हूं।
शराफत का चोला नहीं पहना है मैंने,
मैं थोड़ा सख्त लहजे में बात करता हूं।
तुम्हारी कामयाबी के किस्से अब मशहूर है,
शहर में मैं अपनी नाकामियों के
चर्चे से मशहूर हो रहा हूं।
तुम्हें देख कर लगता है,
तुम हड़बड़ाहट में जी रहे हो,
मैं आज भी हर जगह बड़े
आराम से रह रहा हूं,
तमन्ना तुम्हें है कि जमाना हो तुम्हारी मुट्ठी में
मैंने अपनी फ़क़ीरी से जमाने
को मुट्ठी में कर रखा है।
बड़ी ऐश से कट रही है अब राहुल जिंदगी
मैंने अपना कारोबार
तुम्हारे नाम पर छोड़ रखा है।

राहुल दीक्षित RD
कवि, काव्य गोष्ठी मंच
कांकरोली, जिला राजसमंद

आवाज की दुनियां - रेडियो

अभिव्यक्ति का माध्यम ऐसा
कानों से दिखलाए
इसकी मीठी धुन में देखो
हर कोई डूबा जाए
भरा हुआ है ज्ञान खजाना
सागर से भी गहरा
सदियां गुजरी फिर भी
सबके दिलों में इसका पहरा
वार्ताएं रूपक चर्चाएं
शाम सवेरे हमें सुनाए
सुगम संगीत, काव्य भजनों से
यहां सभी का दिल बहलाए
प्रामाणिक हैं खबरें इसकी
सब कोई इससे समय मिलाए
दूर दराज गांव ढाणी तक
ये स्वयं की पहुंच बनाए
ऐसा ये संचार माध्यम
सबसे लाड़ लड़ाए
आवाज़ की दुनियां का दोस्त
हम सबका रेडियो कहलाए।

श्रीमती अन्विति गोस्वामी
प्रसार भारती (आकाशवाणी)
बीकानेर (राजस्थान)

होली रे होली

होली रे होली, रंगो की होली
भर पिचकारी, खेले रे गौरी।
उड़े रे गुलाल, मस्तों की टोली
खेलो रे खेलो, बन हमजोली।
फागुनी बहार, करे सीना जोरी
अबीर गुलाल, स्नेह की डोरी।
भूलों नफरतें, प्रेम की बोली,
हिलमिल खेलें, आओ रे होली।।

कमलेश जोशी
कांकरोली, राजसमंद

श्याम धणी

फागणिया मा उड़ावे गुलाल
राधा रूकमणी श्याम धणी
राधा रा गौरा गौरा मुखड़ा पे
रंग रंगीलो रंग लगावे म्हाको श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
रूकमणि ले रंग पीछे पीछे भागे
हाथ ना आवे म्हाको श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
भर भर पिचकारी रंग वो डार
इत उत अंग अंग भिगोवे मेरो श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
गोपियों के गालों पर फुलों के सब रंग
खिल
वृंदावन बाग खिलाएं म्हाको श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
शीश चढ़ा म्हाको श्याम बाबा
भक्ता में भक्ति के रंग बरसावे श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
राधा का अंग अंग खूब हर्षाए
जब जब कान्हा उन्हें रंग लगाएं
बजाके बांके बिहारी मुरली
गोपियों संग रास रचाएं मेरो श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
प्रेम का रंग में सबहुं रंग डारे
नटखट म्हारो श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
फागुण री करें अठखेलियां
गोकुल वृन्दावन मथुरा बरसाणा
सब जगह फाग खेलावे मोरो श्याम
राधा रूकमणी श्याम धणी
फागणियां मा उड़ावे गुलाल
राधा रूकमणी श्याम धणी

सत्यनारायण डिडवानिया 'सत्यबोध'
साकेत साहित्य संस्थान, देवगढ़

होली आई रे

होली आई रे, आई रे आई, होली आई रे।
रंग बिरंगे रंगों से, खुशी हैं देखो छाई रे।
होली आई रे, आई रे आई, होली आई रे।

होली के रंग में रंग जाना, सबको गले लगाना।
गरीब हो या अमीर वो, मन भेदभाव ना लाना।
अपन पराया भूल, आपस में सब भाई भाई रे।
होली आई रे आई रे आई होली आई रे।

बुराई को छोड़कर, तुम अच्छाई अपनाना।
मन गर हो राग द्वेष, होली के संग जलाना।
बिछड़े हुए को फिर मिलाने, होली आई रे।
होली आई रे आई रे आई होली आई रे।

एहसासों के रंग में अब तू, सबको ही रंग जाना।
प्रेम में रंग गई राधा,तुम भी रंग प्रेम का लगाना।
बाकी है झूठा दिखावा, सुन ना आई मैं भरमाई।
होली आई रे, आई रे आई होली आई रे।

बच्चे बुड्ढे और जवां,सब रंग प्रेम ही रंग जाना।
जाति मजहब भूल वीणा,बन बच्चें रम जाना।
जीवन में खुशियां हो सबके,खुशी पिटारा लाई।
होली आई रे, आई रे आई होली आई रे।

वीणा वैष्णव 'रागिनी'
शिक्षिका, राजसमंद

प्रेम प्यार का रंग

प्रेम प्यार का रंग लगाना इस होली में,
मधुर मिठास रखना अपनी बोली में।

नहीं रहे कोई भी भूखा मिले निवाला,
खुशियां भर जाए सबकी झोली में।

रंजिश, दुश्मनी, बैर भाव मिटा कर,
शामिल कर, सबको अपनी टोली में।

ऊंच नीच का तुम भेद भाव मिटाकर,
गरीब की बेटी ससम्मान बैठे डोली में।

नीला,पीला, लाल, गुलाबी रंग बिखरे,
लाचार बेबस दीन दुखी की खोली में।

राधा रानी संग में कन्हैया रास रचाये,
सखियां उलाहना दे हंसी ठिठोली में।

'राम जी' कोई नहीं रहे बिना रंग के,
तन मन भीग जाए इस बार होली में।

रामगोपाल आचार्य
पीपली आचार्यान, राजसमंद
9929215040

राजसमंद जिले की खबरों से अपडेट रहने के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News

रंगीली होली

रंग की बहार ले आई है होली,
खुशियां अपार लाई है होली।
उस बालभक्त प्रहलाद की याद ले आई है होली,
भारतीय संस्कृति की याद दिलाने आई है होली,
भक्त को भगवान से मिलाने आई है होली,
पाप को पुण्य में बदलने आई है होली।
रंग की बहार ले आई है होली,
खुशियां अपार लाई है होली।

बिछड़ों को मिलाने आई है होली,
परदेसी पिया को घर ले आई है होली,
राधा को श्याम से मिलाने आई है होली,
छूआछूत व ऊंच-नीच के भेदभाव मिटाने आई है होली।
रंग की बहार ले आई है होली,
खुशियां अपार लाई है होली।

हर खेत खलिहान में बहार लाई है होली,
हर गांव और गली में खुशियां लाई है होली,
हर अत्याचार पर विजय लाई है होली,
हर बाजार और दुकान में महंगाई लाई है होली।
क्या बच्चे और क्या बुढ़े सभी को नचाने आई है होली
इस मस्त जवानी में रंग लगाने आई है होली,
गरीब को अमीर से मिलाने आई है होली,
पुराने विवादों को भुलाने आई है होली।
रंग की बहार ले आई है होली,
खुशियां अपार लाई है होली।

एक दूजे से प्यार जताने आई है होली,
यार को यार से मिलाने आई है होली,
दुश्मन को दोस्त बनाने आई है होली,
प्रीतम को प्रिया से मिलाने आई है होली।
रंग की बहार ले आई है होली।
खुशियां अपार लाई है होली।।

बख्तावरसिंह चुंडावत 'प्रीतम'
आमेट, राजसमंद, मो. 9413287301

Parents' Pressure for Percentage

Hello Reena, I greeted with festive mood and colors in my hands, of course I was happy for the colorful occasion Holi but she didn't sound very normal and stress could be seen over her face. As I sat across from Reena and Mr. Srivastava, their anxiety hung palpably in the air, woven into every word and gesture. Their concern wasn't about holiday festivities, it cantered around the impending board exam results of their two sons. The weight of expectations bore down heavily on them, overshadowing any enthusiasm for the upcoming Holi celebrations.

In their eyes, success was narrowly defined by a percentile— 95% or above.

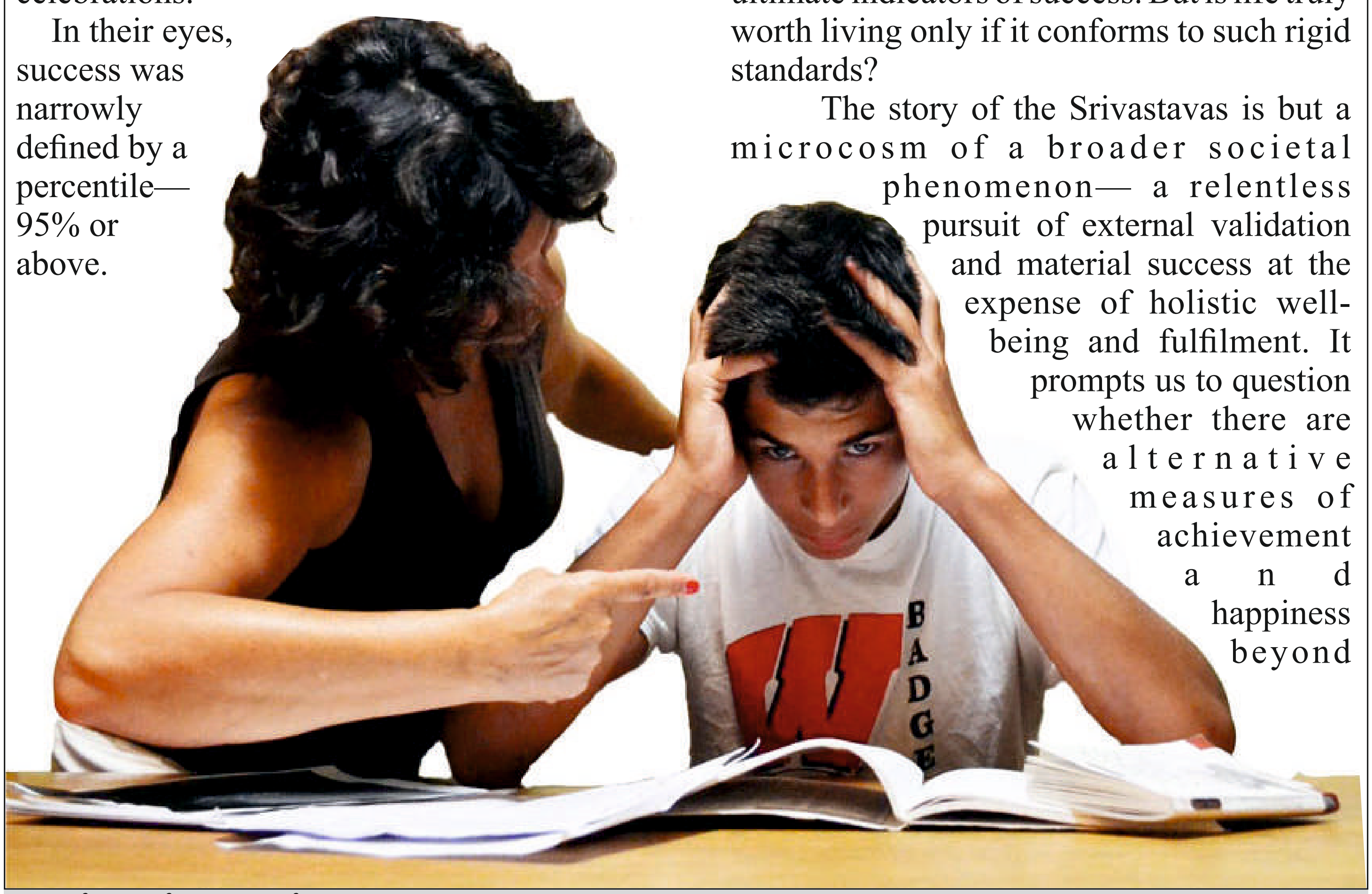

Anything less, and their carefully crafted dreams for their children would crumble like sandcastles swept away by a relentless tide. As I listened to both of them, I couldn't help but wonder about the effects of focusing only on academic success ie grade/percentage.

In today's education system, the emphasis on grades, prestigious institutions, and lucrative careers has become all-encompassing. Parents like the Srivastavas invest their hopes and aspirations in these benchmarks, believing them to be the ultimate indicators of success. But is life truly worth living only if it conforms to such rigid standards?

The story of the Srivastavas is but a microcosm of a broader societal phenomenon— a relentless pursuit of external validation and material success at the expense of holistic well-being and fulfilment. It prompts us to question whether there are alternative measures of achievement and happiness beyond

academic accolades and financial prosperity.

Indeed, life encompasses a myriad of objectives—personal growth, relationships, creativity, community service, and inner peace, to name a few. These intangible treasures often get overshadowed in the glare of academic transcripts and salary figures. Yet, they are the very essence of a life well-lived.

It's high time we reevaluate our notions of success and redefine the parameters by which we measure it. True fulfilment lies not in the pursuit of perfection, but in embracing imperfection and finding beauty in the journey itself. Let us strive to cultivate a culture where individuals are encouraged to pursue their passions, nurture their talents, and forge meaningful connections with the world around them.

As I bid farewell to the Srivastavas, I couldn't help but hope that they would come to realize that their sons' worth transcended the confines of a report card. For in the end, it's not the grades they achieve, but the values they embody and the lives they touch that truly define their success.

To all the precious parents, remember, your child's grades in 10th or 12th grade exams don't determine their entire future. Have faith in them, for their worth goes far beyond just numbers on a report card. Be their pillar of support, take the time to understand their perspective, and avoid placing unnecessary pressure on them.

This Holi, let's celebrate with joy and love, prioritizing our children's well-being above all else.

Wishing you all a happy Holi!

Manisha Lashkari
Principal
Pragati Secondary School
Railmagra, Rajsamand
manishalashkari.blogspot.com

ज्योतिषाचार्य पंडित कन्हैयालाल सांचीहर के आदर्श जीवन के रोचक किस्से

कांकरोली की इस माटी ने भिन्न-भिन्न विधाओं के अनेकानेक महापुरूषो को इस गांव का गौरव बढाने जन्म दिया। पिछले कई अंकों में आपने ऐसे ही कई स्वर्गीय महापुरूषों के बारे में **मेरा गांव मेरे लोग** कॉलम में पढ़ा और अपने पुर्खों के आदर्श, खेल कौशल, शारीरिक बल, राजनैतिक कौशलता और सद्भावना के बारे में जानकारी प्राप्त कर अपने दिवंगत पुर्खों से अवगत हुए। आज हम एक ऐसे ही स्व. श्री कन्हैयालालजी सांचीहर के बारे में आपको बताने जा रहे हैं, जिन्होंने भारतीय ज्योतिष विद्या में महारथ हासिल कर अपने गांव ही नहीं, अपितु जिला, संभाग, और राज्य स्तर तक अपनी ज्योतिष विद्या का लोहा मनवाया और कई लोगों की इस ज्योतिष विद्या से सेवा की।

कांकरोली द्वारकाधीश मंदिर के मुखिया रहे स्व. श्रीलाल जी सांचीहर के घर माता स्व.श्रीमती गंगाबाई की कोख से 16 अगस्त 1920 को एक ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी बच्चे का जन्म हुआ, जिसका नाम कृष्ण भक्ति से ओतप्रोत माता -पिता ने श्री कन्हैयालाल रखा बाल्यकाल से ही अपने औजस्व और विलक्षण बुद्धि कौशल से बरबस सभी का ध्यान अपनी ओर खींचने की क्षमता उनमें थी। कांकरोली की इसी माटी में खेलकूद और विद्या अर्जित कर जब वे बड़े हुए तो अपनी मैट्रिक की परीक्षा पास कर गौपालन, कृषि और ज्योतिष विद्या की ओर आकर्षित हो उसमें ही लगन के साथ जुट गए।

स्व. कन्हैयालाल जी को कुश्ती, पहलवानी, संगीत, पखावज वादन, चित्र कला, का भी शौक था। उन्होंने एक लम्बे समय तक व्यायामशाला के उस्ताद पद का भी कार्यभार संभाला और गांव के कई होनहार पहलवानों को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया। पर अपने ज्योतिष ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने संस्कृत भाषा का गहन अध्ययन किया और वेद, वेदांग, उपनिषद्, पुराण आदि का ज्ञान प्राप्त करके व्याख्याकार ज्योतिष ज्ञान काशी के अज्ञात संत ज्योतिषाचार्य से दीक्षा प्राप्त की। अपनी इन विलक्षण प्रतिभा के कारण ही कांकरोली द्वारकाधीश मंदिर के पीठाधीश्वर स्व. श्री बृजभुषणलाल जी महाराज के विशेष आग्रह से दशहरे से दीपावली अन्नकूट पर वर्षों तक अन्नकूट के मुखिया पद पर रहे।

आपने कांकरोली में श्री द्वारकेश ज्योतिष एवं प्राच्य विद्या शोध संस्थान स्थापित कर इस संस्था के प्रणेता, संरक्षक, एवं संस्थापक रहे। आपके कार्यकाल में इस संस्था ने अनेकानेक कार्य किए और ज्योतिष विद्या के प्रारूप को निखारा। लोगों में ज्योतिष के प्रति अभिरूचि बढ़ाई। आपने राजसमन्द ही नहीं अपितु राजस्थान, गुजरात, मुंबई तक अपनी ज्योतिष की सेवाएं देकर कांकरोली के

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

नाम को रोशन किया। महाराणा मेवाड़, जयपुर राजघराने व कई सुप्रसिद्ध व्यक्तियों से गुरू पद प्राप्त कर सम्मान पाया और तमाम लोगों की सेवा करते रहे। एक संस्मरण मुझे भी याद आ रहा है। मैं जब लगभग 19 -20 वर्ष का रहा होउंगा, मैं किसी काम से अपने घर से कांकरोली बाजार जा रहा था कि पेट्रोल पम्प के स्व. कुरमान हुसैन जी ने मुझे आवाज दी और कहा क्या तुम पंडित कन्हैयालाल जी का मकान जानते हो? मैं हतप्रभ अपना मुंह ताकता रह गया, कुछ बोल नहीं पाया। कुरमान हुसैन जी फिर बोले अरे मंदिर की परिक्रमा के पीछे ही उनका मकान है, ये तुम्हारे साथ आ रहे हैं। इन्हें उनके घर तक पहुंचा दो और उन सज्जन को साथ ले मैं मंदिर के पिछवाड़े लोगो से पूछता हुआ स्व. पंडित कन्हैयालालजी के मकान तक पहुंच गया। आवाज के साथ ही पंडित जी ने अपने घर की ऊपरी मंजिल की खिड़की से झांक कर देखा और बोल पड़े, अरे दीना भाई आओ आओ और दीना भाई को साथ लिए, वे अपने कक्ष में चले गये और मैं अपने कार्य से वापस बाजार आ गया। जब मैं अपना कार्य कर पुनः घर को जा रहा था, तो मैंने कुरमान हुसैन जी को यह बताने के लिए कि मैंने उन सज्जन को पंडित कन्हैयालाल जी के यहां पहुंचा दिया है, कहा तो कुरमान हुसैन जी ने बताया जानते हो, ये सज्जन कौन थे। हमारे मुख्यमंत्री मोहनलाल जी सुखाडिया जी के साले दीना भाई थे। सुखाडिया जी की जन्म कुंडली लेके आये थे, पंडितजी को बताने के लिए। ऐसे ही कई प्रसिद्ध लोग राजनीतिज्ञ, व्यापारी व अन्य लोग पंडित कन्हैयालाल जी सांचीहर पर अथाह भरोसा रखा करते थे।

यूं ही सेवा करते-करते 29 जनवरी 2005 को आप स्वर्ग सिधार गए और अपने पीछे छोड़ गए एक भरा-पूरा परिवार उनके 5 बेटे, व 1 बेटी थी। स्व. श्री नरेन्द्र कुमार सांचीहर, जो अध्यापक थे, वे उनके सबसे बड़े बेटे थे, दूसरे श्री कमल सांचीहर जो एक श्रेष्ठ चित्रकार और अध्यापक हैं। तीसरे श्री प्रदीप सांचीहर जो एक अधिवक्ता है। चौथे श्री कैलाश जो अध्यापक पद पर कार्यरत है और सबसे छोटे श्री मुकेश वे भी अध्यापक हैं और एक ही बेटी तारा देवी।

ऐसे सद्गुणी और बहु प्रतिभा के धनी मेरे गांव के आदर्श पुरूष पंडित स्व. श्री कन्हैयालालजी को हृदय से स्मरण करते हुए उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

कर्णावट की पुस्तक 'मेवाड़ महिमा काव्यगाथा' है काव्यात्मक इतिहास

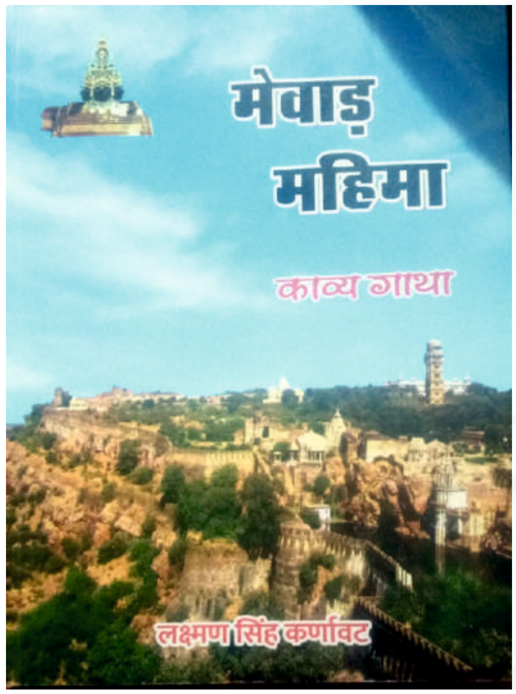

राजसमन्द की माटी में एक ऐसे कवि हृदय और जिज्ञासु प्रवृति के व्यक्ति को जन्म दिया, जिसने अपनी मेवाड़ महिमा काव्यगाथा को पठनीय और मेवाड़ की जानकारी को बड़े ही काव्यात्मक रूप से पाठको तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है। यु ंतो मेवाड़ का 1500 वर्ष पुराना इतिहास खण्ड-खण्ड रूप में कई साहित्यकारों और इतिहासकारों ने गद्य रूप से सविस्तार लिखा है, पर आज तक के काल तक का काव्यात्मक इतिहास मेरी नजर में आज तक नहीं आया। गद्य में विस्तार से लिखे इतिहास को कई टेढ़े- मेढ़े और उतार चढाव वृतांतों से लिखा जाता है। पर श्री लक्ष्मणसिंहजी कर्णावट ने सीधे, सपाट और गतिशीलता से कविता के रूप में मेवाड़ के 1500 वर्ष के इतिहास को दोहे, सोरठा, सव्वैया, कविता, कुण्डली, आदि में लिखकर अपने काव्य कौशल और विध्वता का परिचय दिया।

मेवाड़ महिमा काव्यगाथा लगभग 302 पृष्ठों में अन्य पुस्तकों के मुकाबले दोगुने आकार लिए हुए हैं, जिसे हम छोटा मोटा ग्रन्थ कह दें, तो अतिष्योक्ति नहीं होगी। अच्छा गेटअप, अच्छा कागज, सुन्दर छपाई और कई चित्रावली से सजी यह पुस्तक सचमुच मनोहारी बन पड़ी है। यह पुस्तक मेवाड़ की सार्थकता को प्रकट करती है। तो आमुख लिखने वाले डॉ. प्रदीप कुमावत ने भी बहुत ही सारगर्भित आलेख श्री लक्ष्मणसिंह जी कर्णावट के बारे में लिख इस पुस्तक को पढ़ने की लालसा को पर लगा दिए हैं। इस काव्यगाथा में कवि लक्ष्मणसिंहजी ने एक जगह मेवाड़ की महिमा के बारे में लिखा है कि -

मेवाड़ में जन्म लेने वाला प्राणी आन को महंगी
और जान को सस्ता मानता है।

वंदन में कवि कहता है -

मेवाड़ भूमि की गौरव गाथा जिसका आदि न पाउं अंत न पाउं
उस आनन्द के क्षीर सागर को कागज की नांव पर भर लाउं

आन बान का रक्षक मेवाड़ में कवित्व में एक जगह कवि लिखता है-

रणभेरी के बजते ही यहां करूण जवान बन जाता है
नवोढा पत्नी का आलिंगन छोड व रणभूमि को जाता है।

कवि ने मेवाड़ के हर महाराणा के बारे में कई पृष्ठों में काव्यात्मक कविताएं लिखी है। मैं उनकी बानगी के रूप में एक एक दो दो लाइने दे रहा हूं-

बप्पा रावल मेवाड़ भूमि का प्रथम शासक है कहलाया।
रघुकुल शिरोमणि राम वंशज को एकलिंगजी ने दीवान बनाया।

रावल रतनसिंह के शासनकाल के बारे में कवि ने क्या खूब लिखा है-

रूपवती का केवल दर्शन खिलजी ने प्रस्ताव किया
युद्ध की जनहानि से बचने को राणा ने इसे स्वीकार किया।

महाराणा हरिसिंह के शासनकाल के वर्णन में कवि ने लिखा-

चित्तौड दुर्ग वापस लेने का हरिसिंह ने अभियान चलाया।
निज प्राणों की आहुति दे दी, फिर भी दुर्ग हाथ नहीं आया।।

महाराणा हम्मीर सिंह के शासनकाल में कवि की भावना युं प्रकट हुई-

हम्मीर के शासनकाल में लौटी फिर से केवड की खुशहाली।
स्वर्णिम युग का प्रारम्भ हुआ फैली चहुंदिशा हरियाली।।

महाराणा क्षेत्रसिंह खेता के शासनकाल के बारे में कवि लिखता है-

काल का वर्णन बड़ा सुन्दर और रोमांचक से भरपूर

जिसे अच्छे ढंग से कवि ने कविता में पाठकों तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है-

स्वाभिमान परीक्षा लेने लालसिंह ने बारू को महलों में बुलवाया
अपने हाथों शीष काटकर बारू ने बुंदी नरेश को भिजवाया।

महाराणा लक्षसिंह लाखा के शासनकाल के बारे में कवि ने लिखा -

राज त्याग कर चुण्डा ने मेवाड़ की माटी को पुजवाया
जननी सब मांग हंसा को निज जननी का मान बढ़ाया।।

महाराणा मोकल के बारे में लिखते हैं -

विमाता की आज्ञा पालन कर चुण्डा ने मेवाड़ से था मुंह मोडा,
मोकल निष्कलंक राज करे चुण्डा के भ्राता कोई बने नहीं रोडा।

महाराणा कुम्भकरण के शासनकाल का कवि ने युं वर्णन किया -

इस विजय की यादगार में राणा ने विजय स्तम्भ बनवाया,
सन् 1448 में इस पर केसरिया परचम फहराया।

कुम्भलगढ दुर्ग का वर्णन भी बड़ा सटीक बन पडा है-

36 किमी. परिधी की लम्बी चौडी दिवार
शताब्दियों पूर्व बने हिन्दु मंदिरों ने भी पुनः प्रतिष्ठा पाई।

महाराणा उदय करण के शासनकाल में -

स्वामीभक्त उमरावों ने मिलकर फिर क्रान्ति का बिगुल बजाया,
पिता की हत्या करने वाला उदय जघन्य अपराधी कहलाया।

महाराणा रायमल के बारे में लिखा है -

राजपुती परम्परा पालक बिंदा ने प्राण दें सांगा की जान बचाई।
कालांतर में सांगा ने बंदा पुत्रों को केलवा की जागीर बख्क्षायी।

महाराणा संग्रामसिंह सांगा के बारे में कवि ने लिखा-

साथी राणाओं की नासमझ चाल से सांगा ने धोखा खाया,
सांगा फंस गए अपनों के जाल में बाबर ने मौका पाया।

शिव भक्त भोजराज ने मीरा की भक्ति भावना को सदैव बहुमान दिया-

साध्वी हृदया मीरा के उज्जवल चरित्र का
सदैव उचित सम्मन किया।

महाराणा रतनंसिंह के बारे में कवि लिखते हैं-

बहन कर्मावती से करी मंत्रणा ,बिजौलिया रावत को बुलाया,
हुंमायु को राखी व ताज के संघ जरी का पट्टा भी भिजवाया।

महाराणा विक्रमादित्य के बारे में -

स्वाभिमानी मेवाड़ की सत्ता पर जब-जब भी संकट आया,
मरते दम तक युद्ध किया, पर बेरी के आगे शीष नही झुकाया।

महाराणा उदयसिंह का वर्णन -

मेवाड का राणा दर-दर भटके यह कैसा समय का फेर
छिपते छिपाते पन्ना ले गई उदयसिंह को कुम्भलमेर
शक्तिसिंह मेवाड़ से चलकर जा पहुंचा अकबर के दरबार
कुटनीतिज्ञ अकबर ने शक्ति को आश्रय दे किया सत्कार।

महाराणा प्रताप के बारे में कवि ने कई कई पृष्ठों में अपने कवित्व का लोहा मनवाया है-

सत्य का घाव भर जाता है पर अपमान का घाव नहीं भरपाया,
आगरा जा फुफा अकबर को मान ने उल्टा सीधा भिड़ाया।

हल्दीघाटी युद्ध के बारे में कवि ने लिखा -

मुगल व मेवाड़ की सैन्य संख्या में 1-5 का अन्तर था भारी
शौर्य प्रबल पर साधन सिमित फिर कैसे करें महायुद्ध की तैयारी।।
इस अनुपात के अन्तर से हम, खुले में तो नही लड पायेंगे।
इन्हें पहाडों के बीच आने दो फिर हम मजा चखाऐंगे।
ऐसी चली शमशीर हकीम की मानो आभा में बिजली कडकडाई।
मीणा वीरों के तीरों ने भी मुगल सैनिको को क्षति पहुंचाई।
हर मेवाडी शुरवीर इस समरभूमि में एक धधकता शोला था।
वतन परस्ति का उन्माद सभी में मजहब से बढकर बोला था।

बालभद्र तोमर तंवर के बारे में -

संघी साथियों के संघ हकीम ने तुफानी हमला कर डाला।
मुगल फौज के बांये भाग को रौंद कर घायल कर डाला।।
अपने विश्वस्त पठानों संघ लेकर बना युद्ध का संचालक।
नाम अनुरूप शुर हकीम था राणा प्रताप का सेनानायक।।

हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप के स्वामीभक्त चेतक के बारे में कवि ने क्या खूब लिखा है-

राणा की ऐड लगते ही सिंह बन गया चेतक मतवाला ।
चढ गया हाथी के मस्तक पर किया खुब करतब आला।।

हल्दीघाटी युद्ध के बाद महाराणा प्रताप का संघर्षषील जीवन कवि ने युं प्रकट किया -

छापामार युद्ध करके प्रताप ने मुगल फौज को खुब छकाया,
कुम्भलगढ निकल गया हाथ से किन्तु प्रताप नहीं घबराया।
महाराणा उदयसिंह के 18 रानियां अरू 24 पुत्र थे
इतने बड़े परिवार में अन्तः कलह भी आप में भरपूर थे।

महाराणा अमरसिंह के बारे में -

अमरसिंह ने मेवाड़ में उपजाऊ खेती करना बन्द कराया।
गांवों को उजाड़ दिया और रिआया को जंगल भिजवाया।

महाराणा करणसिंह के बारे में -

खुर्रम को सुरक्षा का वचन देकर कर्ण ने क्षत्रिय धर्म निभाया।
झील पिछोला के बीच सुरक्षित टापू में खुर्रम को ठहराया।

महाराणा जगतसिंह के बारे में कवि कहता है-

महाराणा जगतसिंह धर्मपरायण प्रजापालक कहलाया,
जगत नाम को किया सार्थक, आयुष पूरा कर स्वर्ग सिधाया।

महाराणा राजसिंह के बारे में -

अश्व चढे रत्नेश के सम्मुख दासी थाली लेकर आई,
रक्त रंजित थाल में देखी, हाड़ी के कमल मुख की तरूणाई।
अचंभित रहा क्षण में रावत, फिर मुख को सीने से लगाया।
मुख बोल कठे हो हाडी रानी, यह कैसा तुने पाठ पढाया।
घेवरदेवी के बलिदान से राणा का प्रायश्चित पूर्ण हुआ।
14 वर्ष अनवरत श्रम से राजसमन्द निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।
अतः जलराशि संग्रह से फैली राजसमन्द की शान
किन्तु राणा भूल न पाया घेवर देवी का बलिदान।।
शक्ति स्वरूपा घेवरदेवी की पूजन हेतु मंदिर बनवाया।
विधि विधान से की प्राण प्रतिष्ठा अपूर्व महोत्सव मनवाया।

महाराणा जयसिंह के बारे में -

बेटे के बाघी हो जाने से औरंगजेब यकायक सकते में आया।
कुटनीति को औरंगजेब ने मुअज्जम को मेवाड़ से बुलाया।

महाराणा अमरसिंह के बारे में -

कुंवर अमर ने राजनगर में अति सुन्दर बावडी बनवाई।
कुंवरपदे में निर्मित होने से आगे कुंवर बावडी कहलाई।

महाराणा अमर सिंह द्वितीय के बारे में -

अमरनिवास का निर्माण कराया, पर आयुष बल कम पाया।
मात्र 38 बरस आयु में राजा अमर सिंह सुरलोक सिधाया।

महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय के बारे में -

रणबाज खां ने मेवाती वीरों ने पहले कमान से तीर बरसाए।
पर मेवाड़ी सेना उन पर ऐसी रपटी, दूसरा तीर चढा नहीं पाए।

महाराणा जगतसिंह द्वितीय -

पिछोला में दो जगत प्रसिद्ध महल जगत ने महल बनाएं,
जग मंदिर अरू जगनिवास नाम ये महल जगत में छाए।

महाराणा प्रताप द्वितीय के बारे में -

संकट के समय प्रधान अमर चन्द ने अपना दायित्व निभाया,
प्रशासन का सख्त निमंत्रण कोई उपद्रव होने नहीं पाया।

महाराणा अरिसिंह तृतीय के बारे में -

माधवराव सिंधिया ने अरिसिंह को धमकीभरा पत्र भिजवाया
सामंतों ने मोवाड में रत्नसिंह असली शासक मशहुर कराया।

महाराणा हम्मीर सिंह के बारे में -

सिंधी सैनिकों का वेतन चढ़ गया और खजाना था खाली।
अनुभवहीन नाबालिग राणा कौन करें मेवाड़ रखवाली।

महाराणा भीमसिंह के बारे में -

सूरजगढ के जसवंत को कुंभलगढ़ का किलेदार बनाया,
माधवराज हिदायत सिंधी सिपाही को खालसे से भगाया।

महाराणा जवानसिंह के बारे में -

भीमसिंहजी की गादी पर जवानसिंह ने राज किया,
प्रजापालक भीमसिंह के पदचिन्हों का आगाज किया।

महाराणा सरदारसिंह के बारे में -

घोडवाड को वापस मेवाड़ में मिलाने का अवसर आया,
डमरावों के मनमुटाव कारण, मौके का नहीं लाभ उठाया।

महाराणा स्वरूप सिंह के बारे में -

चित्तौड़ की रखा में सांडा ने उज्जवल इतिहास बनाया,
अकबर के मुख से इज्जत पालडते भिड़ते वीरगति पाया।
कालांतर में अंग्रेजों ने सतिप्रथा पर रोक लगाई,
युग परिवर्तन बोध कराकर सदा सदा के लिए मिटाई।

महाराणा शम्भूसिंह जी के बारे में -

एक फकीर ने उदयपुर आकर चमत्कार का ढोंग रचाया,
भोला शंभू जाने क्यों कर उसकी फरेब भरी बातों में आया।

महाराणा सज्जनसिंह जी के बारे में -

नाथद्वारा तिलकायत गिरधारीलाल ने बालभोग में कमी कराई,
भेंट राशि में गबन कर कर्मचारियों पर भी धाक जमाई।
तब नाथद्वारा फौज भेज तिलकायत को उदयपुर बुलवाया,
मंदिर प्रबंधन खालसे होकर राणा के कब्जे में आया।

महाराणा फतहसिंह के बारे में -

अंग्रेज गवर्नमेंट ने राणा पर समय समय पर दबाव बनाया,
किन्तु राणा सांगा वंशज फतह लेश मात्र भी नहीं घबराया।
केसरसिंह ने चेतावनी चुंटिया लिख
राणा को चलती ट्रेन में कविता झेलाई।
कुंभा, सांगा और प्रताप की राणा को याद दिलाई।
पेटदर्द का बना बहाना दिल्ली जंक्शन से ट्रेन वापस लौटाई।
मेरा इलाज उदयपुर का राजवैद्य ही करेगा यह बात बताई।
इनके मुखिया को फंसाने मेवाड़ी सेना का प्रशिक्षक बनाया।
हिन्दु-मुस्लिम भाईचारे का उत्कृष्ट उदाहरण दिखलाया।।

महाराणा भुपाल सिंह के बारे में -

पिता की स्मृति हेतु भुपाल ने सुन्दर यात्री आवास बनाया,
आगन्तुकों की अगवानी करता फतह मेमोरियल लहलहाया।
जोधपुर नरेश ने भूपाल को पाक में मिलने हेतु उकसाया।
पर मेवाड का यह सिंह सपूत उसके बहकावे में नहीं आया।
महाराणा भूपाल से मिलने सरदार पटेल उदयपुर आया।
सदप्रयासों से प्रभावित हो बराबरी के आसन पर बिठाया।

महाराणा भगवत सिंह के बारे में -

झीलों की नगरी का नैसर्गिक सौन्दर्य अति मन भाया,
भगवत के प्रयासों ने विश्व के मानचित्र पर
यह पर्यटन स्थल लिखवाया।

महाराणा मेवाड फाउन्डेषन अरविन्द सिंह मेवाड के बारे में -

बप्पा रावल से चली परम्परा, 14 शताब्दी तक का इतिहास
मानव से पशुओं तक स्वामीभक्ति का उज्वलल इतिहास।

अब पूरी काव्यगाथा का आनन्द लेने के लिए तो आपको इस पुस्तक को पढ़ना पढ़ेगा। यहां तो मैं एक प्रतिशत से भी कम काव्यगाथा का वर्णन नहीं कर पाया हूं। राजसमन्द के ऐसे प्रभावशाली कवि को जिसने कभी अपने कवि होने का ढिंढोरा नहीं पीटा। शत्-शत् नमन करते हुए उन्हें एसी सुन्दर ऐतिहसिक काव्यगाथा पुस्तक के लिए ढेरों बधाईयां अर्पित करता हूं।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार, राजसमंद
मो. 98284-75288

प्रेरणा

जो प्रकाश और मुक्ति का मार्ग दिखलाए, तीर्थंकर कहलाए

भगवान महावीर का जन्म 599 वर्ष ईसा पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन बिहार प्रांत कुंडलपुर में हुआ था। इनके पिता महाराजा सिद्धार्थ और माता महारानी कृष्णा त्रिशला थी। इनके बाल अवस्था का नाम वर्धमान था। इन्हें वीर, अतिवीर, सन्मतिवीर, के नाम से भी जाना जाता है। भगवान महावीर के जन्म के समय समाज में अराजकता फैली हुई थी। जातिभेद, दासी प्रथा, नारी शोषण, अंधविश्वास, पशुबलि, कर्मकांड में समाज जकड़ा हुआ था। 30 वर्ष की आयु में इन्होंने राजपाट को त्याग दिया और जंगल में जाकर 12 वर्षों तक घनघोर तपस्या में लीन रहकर ज्ञान प्राप्त किया।

12 वर्ष तपस्या करके कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात भगवान महावीर ने 30 वर्षों तक संसार में रहकर चार तीर्थों- साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका की स्थापना की। ये सभी तीर्थ लौकिक तीर्थ न होकर एक सिद्धांत है, जिसके द्वारा इन्होंने लोगों को सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचोर्य (अस्तेय), ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाकर अपनी आत्मा को ही तीर्थ बनाने की बात कहकर समाज को अंधविश्वास व कर्मकांड से मुक्ति दिलाई और अनेकांतवाद, स्यादवाद और अपरिग्रह जैसे अद्भुत सिद्धांत भी दिए।

72 वर्ष की आयु में भगवान महावीर स्वामी कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन मोक्ष को प्राप्त हुए। तभी से जैन धर्म में दीपावली मनाने की प्रथा हुई और तीर्थंकर कहलाए। भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर थे। कुछ लोग अज्ञानतावश जैन धर्म का प्रारंभ भगवान महावीर से मानते हैं, जो कि सत्य नहीं है। जैन धर्म का प्रारंभ भगवान आदिनाथ से हुआ था, जिन्हें 'ऋषभदेव' के नाम से भी जाना जाता है। ये जैन धर्म के पहले तीर्थंकर है। तीर्थंकर का अर्थ होता है, जो सभी प्राणियों को प्रकाश और मुक्ति का मार्ग दिखाएं और इस भवसागर से उन्हें पार लगाए।

24वें तीर्थंकर भगवान महावीर सभी भक्तों को मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं और इस जीवन रूपी भवसागर से पार लगाते हैं। जैन धर्म के अनुसार जलचर, थलचर, नभचर प्राणियों के साथ सभी प्राकृतिक चीजों जैसे कि पेड़-पौधों, वनस्पति यहां तक कि नदी, पहाड़, पत्थरों में भी जीवन होने की मान्यता है।

इसके अतिरिक्त भगवान महावीर ने मानव जाति को अहिंसा के साथ जियो और जीने दो का भी सिद्धांत दिया है। उन्होंने अहिंसा को ही सबसे उच्चतम नैतिक गुण बताया है। उन्होंने अहिंसा की बहुत सूक्ष्म व्याख्या की है। उनके अनुसार अहिंसा का अर्थ है हिंसा का परित्याग करना। हिंसा दो प्रकार की होती है द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा। हिंसा करने के मन, वचन और कर्म तीन साधन होते हैं। किसी को अस्त्र-शस्त्र तलवार से मार देना द्रव्य हिंसा कहलाती है और मन वचन से दूसरे के प्रति झूठ, चोरी, क्रोध, कपट आदि दुर्गुणों का मन में पैदा होना भाव हिंसा कहलाती है।

भगवान महावीर की अहिंसा कहती है। यदि आपके राष्ट्र, धर्म और बहन-बेटियों या अपनों पर कोई संकट आए तो उसका मुकाबला वीरता से करो ऐसे में अहिंसा का व्रत खंडित नहीं होता। दुष्टों से भयभीत होकर भागना या उनका मुकाबला ना करना कायरता की श्रेणी में आता है। अहिंसा वीरों का आभुषण हैं, ना कि कायरों का।

सोनल मंजूश्री ओमर
202बी विंग, श्रीजी अपार्टमेंट,
शांतिनगर, रामापीर चौकड़ी,
राजकोट, गुजरात 360007
मो. 8780039826

ढूंढ रो जलसो

चौबीस गावां रां ठाकर चौबीसा भटसिंहजी, रे कुंवर साब शेरसिंहजी ने परणायां ने पांच बरस वेई गिया, पण पोता रा दर्शन नी वीया। शिवजी री घणी सेवा कीदी। महादेवजी ने मनाया। आधुनिक इलाज बी घणा कराया। भगवान री कृपा सूं शेरसिंहजी रे सपूत साब जन्मया। घणो हरख मनायो। सगा, गिनायत, अर यात दोस्त राजी वीया।

मोटा ठाकर तो ठकराई बी जतावणाी पड़े। होली रो उत्सव आयो। पोता रे ढूंढ रो जलसो राख्यो। कुंवर शेरसिंहजी पढ्या लिख्या राज रा नौकर हां। वणां रे यार दोस्तां रो बी घणो टोलो हो। ढूंढ रा जलसा माय आपणा इलाका में छोड़ सौ सौ कोस सूं बी नुवां पावणां ने बुलाया। भाई बहन, भुआ भतीजी, मामा- मामी, सगला नन्हा सा बालक ने लाड़ लडावे। हाथां सूं नीचे नी उतारे। शेरसिंहजी रा तो पग धरती माथे नी पड़े। दो बार जीमण राख्यो। एक तो सगा गिनायत अर समाज रा सिरदारा ने नूत्यां। दूसरा जीमण नगरभोज राख्यो जिणमें सैतीस ही कौम रा मिनखां ने बुलाया। जलसा मायं जोश अर उत्साह रे सागे पुराना रीति रिवाजां ने भी पालन करवा रो प्रयास आख्या बन्द करीने कीदो।

पहला जीमण री दावत शुरू व्ही। दिन माय दो बज्यां जीमण री जाजम बिछाई। पांत्या लगाया। घर रा आंगणा रे आगे खुला चौगान माय। पनांत्या लागता ही तो कांच री चमचमाती गिलासां सामूं राखी ने देशी विदेशी रंग रंगीलो पीवा रो साधन परूस्यो। सौ सौ कोस सूं आया नूवां पावणां तो देखता ही रेई गिया के यो कांई? बाल ने जन्म री खुशी माथे जो जो परम्परा पूरी करां वोइज गुण अर संस्कार पैदा व्हे।

घर री लुगाया बैठी ही, बालक बैठा हा अर बड़ा बुजूर्ग सिरदार सामे बिराज्या थका हा। आधुनिकता रो चोलो पेरिया नवयवुक कांच री गिलासां सूं पीवण लाग्या। सागे पकोड़ी नमकीन री परूसगारी चालू ही। समझ में नी आयो के परिवार री मरयादा, छोटा बड़ा रो काण कायदो कठे गियो ?

खैर पीवा तक वात वेती तो चालतो। अबे जीमण री वेला आइ तो सौ सौ कोस रा पावणां तो घर मायं घुस गिया। खावा री वस्तु रो नाम सुणता ही थर थर धूजवा लागा। कालजो कांपवा लागो। यो कांई ? बालक रे जन्म रा उत्सव माथे गलत परम्परा। मांसाहारी जानवरां रो भोजन देव तुल्य योनि रा मिनख कर रह्या है।

पंगता मायं मेहमान जीमवा लागा ने बाड़ा माय सूं बकरिया बरड़ायी। दो चार तो रस्सी तोड़ीन पगता मायं फरवा लागी। कुंवर शेर सिंहजी बोल्या- इण बकरिया ने बड़को परो नाको, बरड़ाती बंद वेई जावेला। पण यो कांई ? बकरियां तो पंगत री पातला ने सूंघवा लागी। ठाकरां रे घरां एक जीव जन्मयो जीण री खुशी मायं म्हारा कितरा जीव, जीव सूं गिया। शायद इण पतल मायं म्हारा कालजा रो टुकड़ो तड़फतो व्हेला। अठे म्हारा बेटा रा शरीर रो टुकड़ो व्हेला। नी जाणे कस्यी पंगत री पतल सागे म्हारा लाड़ला रो अवशेष व्हेला। इण भाव सूं बकरियां ममता ने मार ने आंसू ढलकाती रेई पण सगळा सिरदार तो ठिकाणा मायं आयोड़े नुवे जीव रे खातर अणी जीवां ने अरोगवा में मसगुल हा। सौ सो कोस सूं पधारिया पावणा यो देखीन होचवा लागां के एक मां री कूंख री खुशी मायं पांच पांच माता री कूंख उजाड़णी कद बंद होसी। जीव तो जीव है। माता री ममता तो चाहे मानव व्हे या पशु सगला में ईश्वर बरोबर बख्साई है।

नारायण सिंह राव 'निराकार'
शिक्षाधिकारी व साहित्यकार
गणेशनगर, जावद, राजसमंद
मो. 94134-23585

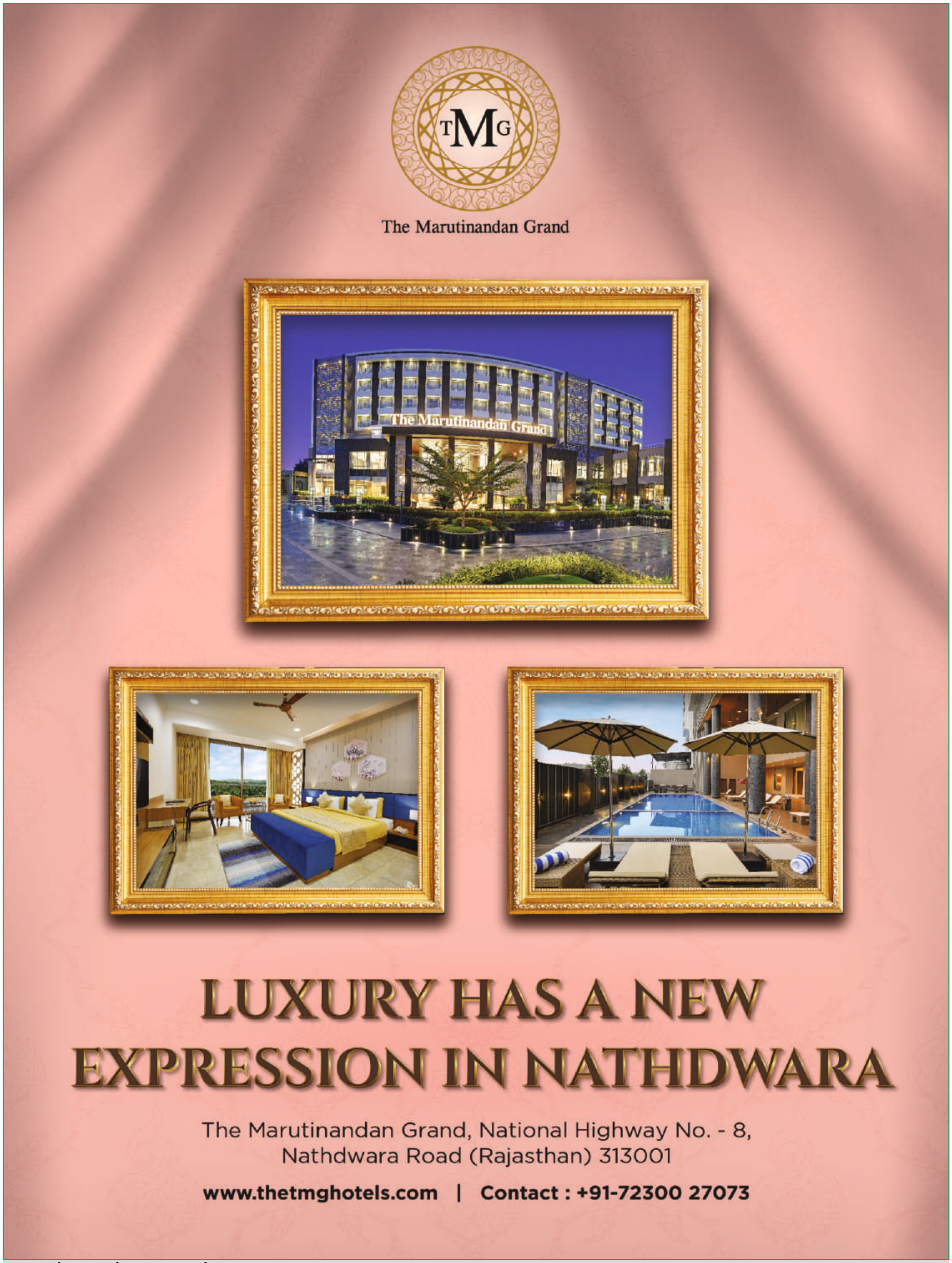
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

रंगों का पर्व होली की समस्त
जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

: अपील :

सहकार योजनाओं का लाभ उठावें।
सहकारिता से जुडे, ऋण सुविधा उपलब्ध

प्रभुलाल जाट
अध्यक्ष

समस्त संचालक मंडल सदस्य

कुलदीपसिंह
व्यवस्थापक

क्रय विक्रय सहकारी समिति, रेलमगरा (राजसमंद)

आसुराम मेवाड़ा
सरपंच

रंगों का पर्व होली की समस्त
जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जब्बरसिंह चुंडावत (मिट्टू बापू) -उपसरपंच
ग्राम विकास अधिकारी एवं समस्त वार्डपंच व ग्रामवासी

✔ पानी की बूंद-बूंद को बचाएं। ✔ अधिकाधिक पौधारोपण कर उनका रख-रखाव व सुरक्षा करें। ✔ अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
✔ जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें। ✔ बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोकें।
✔ ग्राम पंचायत क्षेत्र को स्वच्छ बनाएं रखने हेतु प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण करावें।

ग्राम पंचायत लसानी, पंचायत समिति, देवगढ़

श्रीमती देऊदेवी चौधरी
सरपंच

रंगों का पर्व होली की समस्त
जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

उपसरपंच व ग्राम विकास अधिकारी
एवं समस्त वार्डपंच व ग्रामवासी कुरज

✔ पानी की बूंद-बूंद को बचाएं। ✔ अधिकाधिक पौधारोपण कर उनका रख-रखाव व सुरक्षा करें। ✔ अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
✔ जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें। ✔ बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोकें।
✔ ग्राम पंचायत क्षेत्र को स्वच्छ बनाएं रखने हेतु प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण करावें।

ग्राम पंचायत कुरज, पंचायत समिति, रेलमगरा

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन